ईश्वर प्रार्थना

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

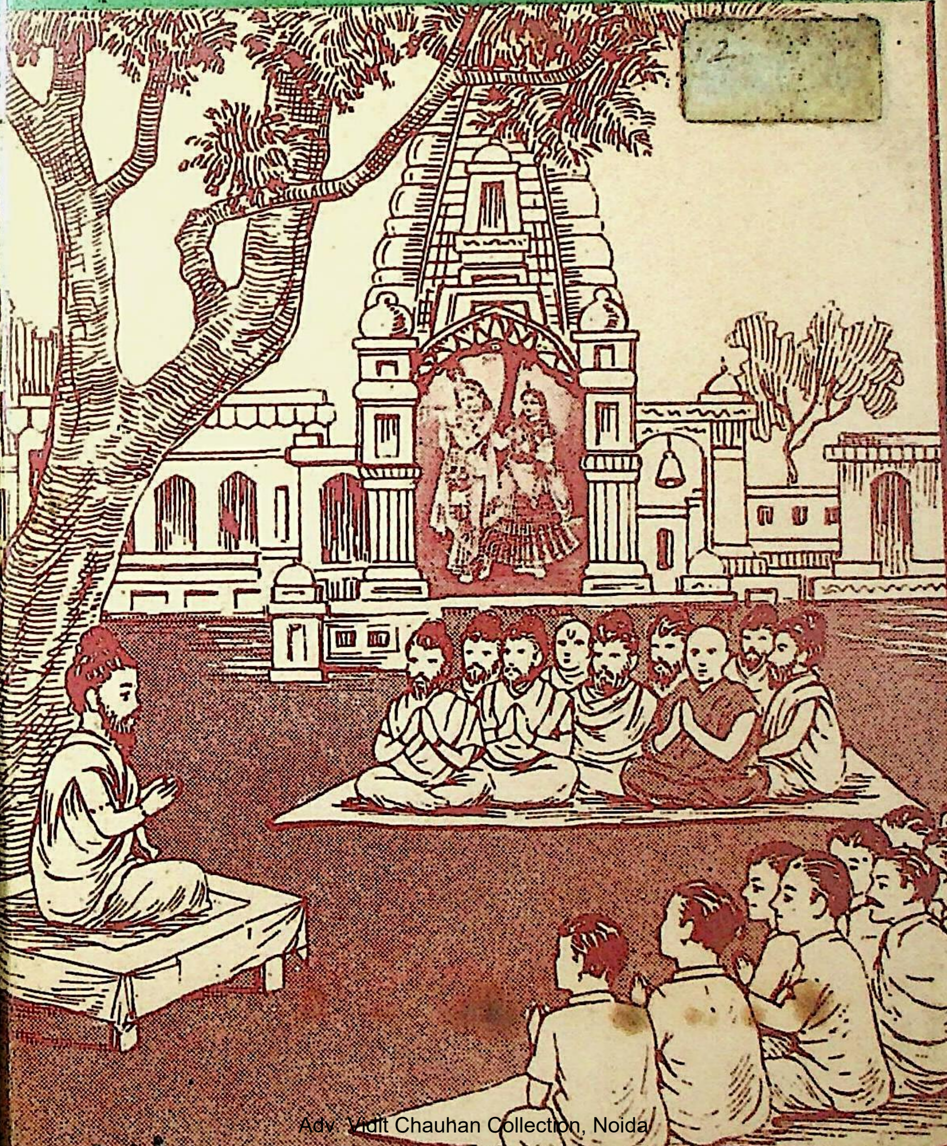

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

स्वामी ओमानन्द

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विद्युति श्री राधिका, मंजुल जलद [illegible]स्याम ।
युगल रूप नयनन बसो, नहीं और [illegible] काम ॥

झाँकी श्री राधारमण बिहारीलाल जी महाराज की

श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम

श्री रमणरेती महावन (गोकुल) मथुरा

Advt. Vidit Chauhan Collection, Noida

B .

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

साधक ग्रन्थ माला—१६

ईश्वर प्रार्थना

(सन्त वचन)

●

अखिल भारत मानव सत्संग मण्डल के संस्थापक
संरक्षक, संचालक, एवं आध्यात्म, ग्रामोद्योग
प्राकृतिक चिकित्सा के विशेषज्ञ एवं
जीवनोपयोगी पुस्तकों के

लेखक—
स्वामी साधनानन्द

***

प्रकाशक—
साधक सहायक संघ
आनन्द निकेतन, नकटिया, बरेली।

द्वितीय नवीन २००० संस्करण | रामनवमी सं० २०२९ | मूल्य दो रुपया

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ईश्वर प्रार्थना का आध्यात्मिक महत्व

ईश्वर प्रार्थना जीवन विज्ञान है। जब प्राणी का दुःख इतना बढ़ जाता है कि वह सब ओर से निराश हो जाता है। उस समय एक ऐसी शक्ति पर विश्वास जाग्रत होता है जिसे उसने कभी देखा नहीं है केवल सुना है कि ईश्वर है। वैसे तो ईश्वर का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता, परन्तु दुःखी दशा में जिस शक्ति से, सहायता मिलती है उसी का नाम ईश्वर है।

मानव की अन्तर आत्मा में भगवान की दिव्य शक्ति विद्यमान है उससे सम्बन्ध, दुःखी दशा में ही होता है, क्योंकि दुःखी दशा में मन चित्त की पूर्ण एकाग्रता रहती है। इस एकाग्रता में ही ईश्वर से सम्बन्ध होता है। जीवन विज्ञान की दृष्टि से जिसमें एकाग्रता होती है उसको शक्ति स्वतः प्राप्त होती है। ग्रीष्म काल में तपता हुआ हाथी जब शीतल जल के सरोवर में अन्दर घुस जाता है तब उसकी सारी तपन नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार ईश्वर प्रार्थना करते समय जीव तीनों प्रकार के ताप से मुक्त होकर शान्ति का अनुभव करता है।

श्रीरामचरित मानस में जब रावण का इतना अत्याचार बढ़ गया कि पृथ्वी अकुला उठी, देव लोक भयभीत हो गया। सभी दुःख करने में असमर्थता अनुभव करने लगे।

बैठे सुर सब करहि विचारा, कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ।।

इस सभा में शिव ब्रह्मा आदि सभी देवता थे। कोई कहता बैकुंठ चलें, कोई कहे क्षीर सागर चलें। परन्तु भगवान श्री शंकर जी ने कहा कि भगवान सभी जगह व्यापक है वह तो प्रेम से प्रगट होते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तेहि समाज गिरजा मैं रहेहूँ।
अवसर पाइ बात एक कहेऊ॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम से प्रगट होहि मैं जाना॥
देश काल अरु विदिसिहु माहीं।
कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं॥
अग जग मैं सब रहित विरागी।
प्रेम से प्रभु प्रगटहि जिमि आगी॥

ईश्वर प्रार्थना करते समय इस बात का ध्यान रक्खा जाय कि जिसकी हम प्रार्थना कर रहे हैं वह दूर नहीं है। सर्वत्र कूटस्थ की भांति मौजूद है। जिस प्रकार अग्नि कष्ट में सर्वत्र रहती है, परन्तु जहाँ अग्नि का सम्बन्ध होता है वहाँ अग्नि प्रगट दिखाई देती है। इसी प्रकार भगवान तो सब जगह है परन्तु जहां पर प्रेम है वह भगवान प्रगट होता है। इसलिये ईश्वर प्रार्थना करते समय हृदय प्रेम से भरा रहे। प्रेम ही भगवान का स्वभाव है, प्रेम ही मानव का जीवन है।

रामहि केवल प्रेम पियारा।
जानि लेउ जो जाननि हारा॥
जो जानहि जेहि देउ जनाई।
जानत तुमहि तुमहि होई जाई॥

- प्रार्थना असीम अनन्त सत्य से सम्बन्धित करती है।
- प्रार्थना अपनी अयोग्यता और दुर्बलता की स्वीकृति पर होती है।
- प्राथना साधक के विकास का अचूक उपाय है तथा आस्तिक प्राणी का जीवन है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मेरा जीवन

ईश्वर प्रार्थना, मानव का सर्वोच्च अन्तिम अचूक अस्त्र है। आस्तिक के लिए भगवत, विश्वास, निर्बल का अतुल, असीम बल, ज्ञानी का अचूक अस्त्र त्यागी के लिये शान्ति सागर के समान है।

मेरी मां ने छै बर्ष की अवस्था में ईश्वर प्रार्थना करने प्रेरणा दी थी। वह प्रार्थना आज भी मेरे जीवन का अंग बनी है। जब मैं बड़ा हुआ और पढ़ने जाने लगा, मैं नित्य प्रातः काल ईश्वर प्रार्थना करता था। जिस दिन प्रार्थना करना भूल जाता था, उस दिन स्कूल के सभी कार्य गलत हो जाते थे और मार भी पड़ती थी। इससे मुझे अब अनुभव होता है कि ईश्वर प्रार्थना करना मानव का प्रथम कर्तव्य है। प्रार्थना करने से बुद्धि में ज्ञान शक्ति का विकास होता है। वर्तमान समय में जो विद्यार्थी ईश्वर प्रार्थना नहीं करते उनकी बुद्धि में विद्या ज्ञान के ग्रहण करने की शक्ति नहीं होती है। यदि किसी में होती है तो उसमें सत्व गुणों की कमी रहती है। ईश्वर प्रार्थना ऐसी साधना है कि जो सभी धर्म वाले मानते हैं।

प्रार्थना, स्तुति, और उपासना, मानव जीवन की साधनायें हैं। स्तुति में भगवत का गुणानुवाद, और अपनी दीनता होती है। उपासना से भगवान तत्व की प्राप्ति होती है। प्रार्थना दुःखी हृदय की पुकार है। सच्चे हृदय से दुःखी होकर जब प्रार्थना की जाती है बह प्रार्थना तत्काल सुनी जाती है। प्रार्थना करने में देर भले ही हो परन्तु प्रार्थना की पूर्ति में देर नहीं होती है। सच्ची प्रार्थना उसी समय होती है जब मानव के जीवन में ऐसा दुःख आ जाय जो संसार की कोई भी बड़ी से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बड़ी शक्ति दूर करने में असमर्थ हैं। सब ओर से निराश होने पर हो सच्ची प्रार्थना हाती है। दुःख ही दुःखहारी भगवान को याद कराता है मेरे जोवन में अनेकों वार ईश्वर प्रार्थना से दुःख दूर करने में सहायता मिली है। उसमें से एक दो का मैं उल्लेख कर रहा हूं।

सन् १९३९ में मेरे पर में एक फोड़ा हो गया। फोड़े के साथ ज्वर भी रहता था। फोड़ा काफी भयंकर हो गया, साथ में ज्वर भी चलता था। गांव में न कोई अच्छा डा० न कोईवैद्य। जो कोई जो बताता था वही करता था। उस समय मैं प्राकृतिक चिकित्सा का नाम भी नहीं सुना था। आज मुझे ऐसा अनुभव होता है कि यदि प्रत्येक परिवार में छोटे छोटे रोगों को दूर करने का प्राकृतिक चिकित्सा ज्ञान हो जाय तो धन की भी बचत होगी और कष्ट भी कम होगा। यदि उस समय मुझे ज्ञान होता तो मैं बिना आपरेशन के भी केवल मिट्टी से फोड़े को ठीक कर लेता। परन्तु प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी नहीं थी और कोई बताने वाला भी नहीं था। झाड़ फूक, दवा यही तो देहात का इलाज है। गांवों में डाक्टर भी नहीं मिलते हैं। वेचारे गरीव, साधन हीन लोग बिना मौत मरते हैं और दुःख उठाते हैं। सर्व साधारण को बिना मूल्य स्वाधीनता पूर्वक करने वाली प्राकृतिक चिकित्सा की शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है। जिसका परिणाम समाज के लाखों व्यक्ति दुःख के रूप में भोग रहे हैं।

फोड़ा ने अपना विकराल रूप धारण कर लिया था। बिना आपरेशन के अब कोई मार्ग नहीं रह गया था। मेरे गांव से तीन मील पर एक छोटा सा अस्पताल था वहाँ से डाक्टर को बुलाया गया। डाक्टर ने देखा और दूसरे दिन आपरेशन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किया। आपरेशन में मुझे असह कष्ट हुआ। उसके बाद नित्य ड्रेसिंग करने में आपरेशन करने से भी अधिक भयंकर पीड़ा सहनी पड़ती थी। इस पीड़ा को मैं सहन नहीं कर सका इस लिए ड्रेसिंग कराना बन्द कर दिया। देशी उपचार आदि किये गये। ज्वर तो ठीक ही गया था। मेरा पैर सीधा नहीं होता था। मैं खड़े होकर नहीं चल सकता था। एक दिन स्नान करते समय मुझे ऐसा भास हुआ कि अब मैं नहीं बच सकता हूं। मेरी मृत्यु मेरे शिर पर आ गई है। मुझे आत्म ज्ञान तो था नहीं जो मृत्यु का भय न होता। मैं मृत्यु से भयभीत हो गया। मुझे ऐसा लगा कि अब मुझे कोई नहीं बचा सकेगा। ऐसी अवस्था में मेरे सामने एक भगवान को छोड़ कर और कौन बचा सकेगा ? इस समय मैं भगवान के सामने रोकर ईश्वर प्रार्थना करने लगा। एक घंटे तक में रोता रहा। आखिर रोने का भी अन्त होता है। मैं बाहर एक चारपाई पर लेट गया। थोड़ी देर में मेरे ससुराल से देखने के लिये आये थे। इन्होंने देखा और एक मलहम तिल के तेल में बना दिया। उसी को मैं लगाता रहा और मैं अच्छा हो गया। मलहम तो निमित्त मात्र था इसमें थी भगवान की कृपा। जो ईश्वर प्रार्थना से प्राप्त होती है।

दूसरी घटना ईश्वर प्रार्थना की मेरे आध्यात्मिक जीवन की है। जब मैंने संसार से विरक्त होकर भगवान की शरण में गया। उस समय मैं कुछ जानता भी नहीं था। केवल गीता रामायण का पाठ नाम जप और ईश्वर प्रार्थना ही मेरे जीवन की साधना थी।

४ अप्रेल सन् १९४४ की रात्रि को मैंने गृह त्याग किया और मधुवन जंगलों में यमुना के किनारे ही अपनी तपस्या की।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उस समय में अपार अशान्ति सागर में गोते लगाता रहता था ८ अप्रैल को मैं शमशान घाट में था। उस दिन मेरा जीवन अत्यन्त दुःख से भरा गया। कहाँ जाऊँ? किससे कहूँ? मेरी व्यथा को कौन सुनने वाला है। असहाय होकर मैं रो-रो कर भगवान से प्रार्थना करने लगा? प्रार्थना ही दुःख सागर में शान्ति लाती है। उसी दिन रात्रि को ११ बजे एक दिव्य शक्ति ने दर्शन दिया और मुझे यहाँ से आगे जाने का आदेश देकर लुप्त हो गई। मैं प्रातः यमुना स्नान करके किनारे-किनारे चल पड़ा और ब्रह्मांड घाट में १-२ दिन रह कर चिन्ता हरण घाट में भजन में लग गया। उस दिन की ईश्वर प्रार्थना से मुझे अपना मार्ग मिला और मैं संसार के दुःख कारक बन्धन से मुक्त हो गया। इसी प्रकार की अनेक घटनायें हैं जिनकी एक स्वतन्त्र पुस्तक बन सकती है। यहाँ मैंने संक्षेप में आवश्यक घटनाओं का उल्लेख किया है। मैं अपने अनुभव के अधार पर प्रेमी जनों से निवेदन करता हूं कि सभी को प्रार्थना को जीवन का परमावश्यक अंग बनाना चाहिये।

पाठक लोग यह जानने के इक्षुक होंगे कि मैंने कौन सी प्रार्थना की थी। वह इसी पुस्तक में छाप दी गई है। पाठक लोग स्वयं तलाश करें।

साधनानन्द

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ईश्वर प्रार्थना करने के नियम

(१) प्रातः काल उठने के बाद, और सोते समय ईश्वर प्रार्थना अवश्य करें। हाथ मुँह साफ करके प्रातः पूर्व की ओर रात्रि को पश्चिम की ओर मुँह करके करें।

(२) प्रार्थना करते समय बात न करें, अपने मन को इधर उधर न जाने दें। यदि मन जाये तो जोर जोर से प्रार्थना करें।

(३) सामूहिक प्रार्थना सबको एक स्वर से करना चाहिये आगे पीछे नहीं। यदि प्रार्थना याद न हो तो मौन होकर सुनें। प्रार्थना के शब्दों का सही उच्चारण करें।

(४) प्रार्थना में समय से आने का प्रयास करे तथा प्रार्थना की पुस्तक साथ लायें।

(५) कहीं पर प्रार्थना हो रही हो और वहाँ जाने का समय नहीं तो एक मिनट मौन होकर खड़े हो जायें।

(६) ईश्वर प्रार्थना में किसी भाषा या बोली का मतभेद न करें। सभी के पीछे भगवान का विश्वास और प्रेम काम देता है।

(७) सामूहिक प्रार्थना में एक लाइन से बैठें तो अच्छा रहता है।

(८) सिद्धासन, पदमासन, या सुखासन से बैठ कर पीठ की रीढ़ को सीधा करके बैठें, हाथ जोड़ कर बैठें बच्चों को भी इसी प्रकार बिठावें।

(९) छोटे बच्चे वाली मातायें सबसे पीछे बैठे और बच्चा रोये तो गोद में लेकर बाहर चली जायें जब शान्त हो जाय तब फिर आकर बैठ जायें।

(१०) बच्चों को एक जगह न बिठावें बड़े लोगों के बीच में बिठाव एक जगह बैठने से आपस में बात करने लगते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनाथों के नाथ

अनाथों के नाथ एक भगवान ही हैं। इस पर एक पौराणिक कथा है। दो पक्षी एक डाल पर बैठे थे। नीचे तालाव था, पेड़ से एक चीटा तालाव के बीच में गिर गया। पानी में चीटा अनाथ हो गया, इस समय उसकी रक्षा कौन करेगा ? कबूतर ने देखा कि चीटा बुरी तरह परेशान है। कबूतर ने एक पत्ता चोंच से तोड़ कर डाल दिया, पत्ता चीटा के समीप में गिरा, चीटा उस पत्ते पर चढ़ गया, हवा के झकोरों से किनारे लग गया, चीटा पार हो गया।

थोड़ी देर में एक वहेलिया आया, कबूतर और कबूतरी को देखकर उसके बध करने के लिये तीर का निशाना लगाने लगा। कबूतर ने देखा और कबूतरी से कहा कि प्रिये अब तो प्राण नहीं बच सकते हैं। देखो वहेलिया तीर चढ़ा रहा है, उधर उधर बाज मंडरा रहा है दोनों तरफ से अब मृत्यु ही है। मुझ अनाथों को अब कौन बचायेगा। कबतरा ने कहा कि अनाथों के नाथ एक भगवान हो है उन्हें पुकारो। दोनों भगवान की प्रार्थना करने लगे।

अब की राखि लेउ भगवान।
हम अनाथ बैठं द्रुम डरिया, पारिध साधेउ बान ।।
जाके डर से भाग चहल हौं. ऊपर ढुवचै सचान ।।
दुऊँ भाँति मृत्यु भई हमारी कौन उवारे प्रान ।।
सुमिरत ही अहि डस्यो पारधी कर छूटे संधान।
सूरदास सो लगेउ सचानहि जै जै कृपा निधान ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

२५—हे नाथ अब तो निभाना पड़ेगा २३
२६—शरणागत कृपाल प्रभो हमको इक आस तिहारी है २४
२७—भगवान तुम्हारी जय होवे-जगदीश तुम्हारी जय होवे २४
२८—उठो-उठो ए सोने वालो, रैन नहीं अब हुआ सवेरा २५
२९—पगले राम नाम तू जप ले २६
३०—मेरी राखो लाज गिरधारी मैं दु:खिया शरण तिहारी २५
३१—धिक्कार है जीना विना पति के नारी का पुछैया कोई नहीं २६
३२—कृपा है तभी ऐसा अवसर मिलेगा २७
३३—जगत में जीवन सफल है उनका जो सत्य पथ में जा रहे २८
३४—मन्दिर तो वही जामें सू वास करें २८
३५—सीता राम, सीताराम, सीताराम बोलो २९
३६—दो बार जाये द्वारका, त्रिवेणी जाये तीन वेर २९
३७—मन भज लो बारम्बार यही श्री हरिशरणम्, श्री हरिशरणम् ३०
३८—आये को हर्ष नहीं गये को शोक नहीं ३१
३९—इतनी कृपा तो कर दो जब प्राण तन से निकले ३१
४०—मोसम कौन अधम जग माहीं ३२
४१—जय रघुनन्दन जय घनश्याम हे दु:ख भंजन तुम्हें प्रणाम ३२
४२—इस जीवन का सार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन ३३
४३—भोले भाले शम्भू तुमको लाखों प्रनाम ३३
४४—तेरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया काहे सोवे ३४
४५—नारायण भज, नारायण भज, भजु नारायण भाई ३४
४६—जग में हरि बिन कोई काम न आयो ३५
४७—तुम सम को उदार जग माहीं ३५
४८—इस जग में कितना ही तुम स्वछन्द बिचर कर देख लो ३६
४९-ओ आने वालो इतना समझ लो, इस जग से तुमको जाना ही होगा ३७
५०—शुभ अवसर है तो यह है जो चाहो लाभ उठाओ ३८
५१—देखो किसने क्या पाया, मानव क्यों जग में आया ३९
५२—देख जगत का लो न सहारा, खुद भूला है जगत विचारा ४१
५३—जब नरतन तुम्हें निरोग मिला सत्संगति का भी योग मिला ४२
५४—शुभ अवसर बीते जाते हैं, तुम बुद्धिमान मानव जागो ४३

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

५५—एक ईश्वर के गुण गान गाते चलो ४४
५६—अब तक तुम जाने क्या होते देखो कितने दिन बीत गये ४५
५७—मन भज लो तुम नाम यही श्री हरिशरणम्-श्री हरिशरणम् ४६
५८—भगवान तुम्हारी जय होवे, भोले नाथ तुम्हारी जय होवें ४७
५९—उधो मैं तो श्याम के हाथ बिकानी ४८
६०—मोसम कौन पतित जग माहीं ४८
६१—गोविन्द हरे गोपाल हरे जय जय प्रभु दीन दयाल हरे ४९
६२—कृष्ण गोविन्द गाते चलो अपने मन को उन्हीं में लगाते चलो ५०
६३—मन भजलो राधा कृष्ण मुरारी ५१
६४—उठ जाग मानव पड़ा अब क्यों तू सो रहा है ५२
६५—मेरी राखो लाज गिरधारी मैं दुखिया शरण तुम्हारी ५३
६६—मैं प्रभु पतित पावन सुने ५३
६७- सदा सत्य को ही खोजते रहो तुम ५४
६८—अब सुन लो विनय हमारी. हम आये शरण तुम्हारी ५५
६९—बिगड़ी मेरी बना दो हे दीनबन्धु भगवन ५६
७०—हे मेरे भगवान दीना नाथ ऐसी कृपा अब कीजिये ५७
७१—भगवान की जब होती कृपा तब सत्संग सुलभ होता है ५८
७२—दीनन के दुःख हारी राधेश्याम श्यामा श्याम ५९
७३—रे मन मूढ़ अब कर खबर, क्यों पूंजी अपनी खो रहा है। ६०
७४— प्रभु जी जो दोष हमारे गिनिहों ६०
७५—संसार में वह वीर है जो मोह को है त्याग पाता ६१
७६—जनम-जनम से जग में भटके हम, जीवन को दुःख रहित ६२
७७—यह सुन्दर अवसर पाकर के भी जीवन सफल बना न सके ६३
७८—जग में मौज उड़ाने वालो एक दिन तुमको जाना ही होगा ६४
७९—मोह निशा में सोने वालो जीवन व्यर्थ बिताते क्यों तुम ? ६५
८० - रे मन मूरख सोच जरा तू प्रभु की शरण न आयेगा ६६
८१—इसको सब कोई क्या समझे जो सन्देश सुनाते हैं ? ६७
८२- नारी के दो रूप एक वह नारी जो जग से मोह करे ६८
८३- हे नाथ हमारे जीवन का उद्धार न जाने कब होगा ? ७१

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

८४—नारायण भज नारायण भज, भज नारायण वनमाली ७२
८५—गुरुदेव ! तुम्हारे दर्शन का सौभाग्य न जाने कब होगा ? ७३
८६—हे मेरे गुरुदेव तुमको बारम्बार प्रणाम है। ७४
८७—आरती श्री गुरुदेव की कीजै, तन मन प्राण निछावर कीजै ७४
८८—गुरुदेव तुम्हारे चरणों का जब हम ध्यान लगाते हैं। ७५
८९—जागों सज्जन बृन्द हमारे मोह निशा के सोवन हारे ७६
९०—इस जीवन का सार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन ७७
९१—पगले अपने को पहिचान ७७
९२—साधक तुम यह भूल न जाना देखो जीवन दो दिन का ७८
९३—तेरी गठरी में लागे चोर बटोहिया काहे सोवे ७८
९४—जय रघुनन्दन जय घनश्याम हे दुःख भंजन तुम्हें प्रनाम। ७९
९५—यदि सदा सत्संग में ही आते रहोगे ८०
९६—प्रभु कैसा खेल रचाया ? ८१
९७—तुम बुद्धिमान मानव सोचो तुम किधर भागते जाते हो ८१
९८—सोचो झुठे जग के सुख में कब तक चैन मनाओगे ? ८२
९९—कितना सुन्दर अवसर है तुम जीवन सफल बनाओ ८२
१००—साधक उसे सराहिये चले धर्म की रीति ८३
१०१—ऊधौ प्रेम जगत में सार ८४
१०२—भगवान तुम्हारे चरणों में हम आनन्द मनायेगें ८४
१०३—ओ जाने वाले सोंच जरा क्या संग लेकर तू जायेगा ? ८५
१०४—हे दयामय दीनबन्धु अब नाथ करुणा कीजिये ८५
१०५—तुम बुद्धिमान मानव जागो, क्यों मोह में दुःख उठाते हो ८६
१०६—मनुआ राम नाम सुख दाई ८६
१०७—मानव जीवन क्या है ? तुम इसकी पहिचान न भूलो ८७
१०८—जग में हरि बिन कोई काम न आयो। ८८
१०९—साधक राम से प्रेम बढ़ाओ- जीवन सफल बनाओं। ८८
११०—मिली सफलता उन्हीं को जग में जो दोष अपने घटा रहे हैं ८९
१११—मानव तुम इस जग में अब सुख से रहना सीख लो ९०
११२—सदा स्वस्थ रहने की प्रेरणा (पद्य) ९१
११३—अन्य आवश्यक जानकारी ९२

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chandigarh

अखिल भारत मानव सत्संग मण्डल की दैनिक

ईश्वर प्रार्थना

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्, पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेंवावशिष्यते ।।

*

शान्ताकारं भुजगशयनम् पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन सदृशम् मेघ वर्ण शुभाङ्गम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनम् योगिभिर्ध्यान गम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भव भय हरणं सर्वलोकैक नाथम् ।।

*

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।
त्वमेव सर्वम्मम् देव देव ।।

*

हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिये,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये ।
लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें,
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर ब्रतधारी बनें ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये।

यह मन न जाने क्या क्या दिखाये,
कुछ बन न पाया मेरे बनाये।।

संसार में ही आसक्त रहकर,
दिन रात अपने मतलब की कहकर।

सुख के लिये लाखों दुःख सहकर,
यह दिन अभी तक यों ही गवाये।।

ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ,
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।

मैं आपको चाहूँ और पाऊँ,
संसार का कुछ भय रह न जाये।।

वह योग्यता दो सत्कर्म करलूँ,
अपने हृदय में सद्भाव भरलूँ।

नर तन है साधन भव सिन्धु तरलूँ
ऐसा समय फिर आये न आये।।

हे प्रभू हमें निरभिमानी बना दो,
दारिद्र हरलो दानी बना दो।

आनन्दमय विज्ञानी बना दो,
मैं हूँ पथिक यह आशा लगाये।।

**

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

साधक की नैय्या नटनागर अब तो पार लगा देना।
मैंने दुःख में तुम्हें पुकारा डूबत नाव बचा लेना॥
दुनिया से मुख मोड़ा है अब आपसे नाता जोड़ा है।
द्वार पे तेरे आया हूँ अब नाथ न तुम ठुकरा देना॥
ज्ञान नहीं कुछ मुझ में है ध्यान नहीं कुछ मुझ में है।
अधमों को जैसे तारा है वैसे ही पार लगा देना॥
दीनबन्धु मैं शरण तुम्हारी, कृपा करो अब हे दुःखहारी।
हाथ जोड़कर विनय हमारी अपना दास बना लेना॥

राजा राम राम राम, सीताराम राम राम
सीताराम राम राम, राजा राम राम राम।

बन्दौं गुरुपद पद्म परागा, सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।
बन्दौं रामनाम रघुवर को, हेतु कृसानु भानु हिमकर को।
बन्दौं बालरूप सोइ रामू, सब सिधि सुलभ जपत जिसुनामू।
बन्दौं कौशल्या दिशि प्राची, कीरति जासु सकल जग माची।
जनकसुता जग-जननि जानकी, अतिसयप्रिय करुणा निधानकी।
ताके युगपद कमल मनावौं, जासु कृपा निर्मल मति पावौं।
बन्दौं प्रथम भरत के चरणा, जासु नेम व्रत जाइ न वरणा।
रामचरण पंकज मन जासू, लुब्ध मधुप इव तजइ न पासू।
बन्दौं लक्षिमन पद जल जाता, सीतल सुभग भगत सुख दाता।
रिपुसूदन पद कमल नमामी, सूर सुशील भरत अनुगामी।
महावीर विनवौं हनुमाना, रामु जासु यश आप बखाना।
कपि पति रीछ निशाचर राजा, अंगदादि जे कीश समाजा।
रघुपति चरण उपासक जेते, खग मृग सुर-नर असुर समेते।
बन्दौं सबके चरन सुहाये, अधम शरीर राम जिन्ह पाये।
सियाराममय सब जग जानी, करौं प्रणाम जोरि युग पाणी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानव सेवा संघ की दैनिक

प्रार्थना

मेरे नाथ !

आप अपनी सुधामयी, सर्वसमर्थ, पतित पावनी, अहैतुकी कृपा से, दुःखी प्राणियों के हृदय में त्याग का बल एवं सुखी प्राणियों के हृदय में सेवा का बल प्रदान करें, जिससे वे सुख-दुःख के बन्धन से मुक्त हो, आपके पवित्र प्रेम का आस्वादन कर कृत-कृत्य हो जायँ।

मेरे नाथ !

आप अपनी सुधामयी, सर्वसमर्थ, पतित पावनी, अहैतुकी कृपा से, मानव-मात्र को विवेक का आदर, तथा बल का सदुपयोग करने की सामर्थ्य प्रदान करें।
हे करुणा सागर ! अपनी अपार करुणा से शीघ्र ही राग द्वेष का नाश करें। सभी का जीवन सेवा, त्याग, प्रेम से परिपूर्ण हो जाय।

ॐ आनन्द ! ॐ आनन्द !! ॐ आनन्द !!!

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शरणागति भजन

शरण में आये हैं हम तुम्हारी दया करो हे दयालु भगवन।
सम्भालो बिगड़ी दशा हमारी दया करो हे दयालु भगवन॥

हममें न बल है न हममें शक्ती, न हममें साधन न हममें भक्ती।
तुम्हारे दर के हम हैं भिखारी, दया करो हे दयालु भगवन॥

जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक, जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी दया करो हे दयालु भगवन॥

अनेक अधमों को तुमने तारा, अनेक भक्तों को है उबारा।
हमें उबारो तो हम भी जाने, दया करो हे दयालु भगवन॥

तुम्हीं हो माता तुम्हीं पिता हो, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं।
तुम्हीं हो साधक के दुःख हारी, दया करो हे दयालु भगवन॥

सन्त वचन :–

तुम उस सर्व शक्ति मान की शरण लो जिससे ही तुम्हें सब कुछ मिला है। शरणागत की रक्षा करना मानवता है। कोई दुःखी होकर यदि तुम्हारी शरण में आवे तो भगवान की दी गई शक्ति सम्पत्ति से उसकी सहायता करो।

महान की शरण में मरण का भय मिट जाता है, मरण का भय विनाशी की शरण में रहने तक ही रहता है। तुम अपने से भिन्न की शरण न लो जिसमें नित्य निरन्तर हो. जो नित्य निरन्तर पूर्ण है उसे जानो। शरणागत को आवश्यक वस्तु बिना मागें ही मिलती है, अनावश्यक वस्तु मांगने पर भी नहीं मिलती। काम का अन्त होने पर राम की कृपा राम से मिलती है। जिसके सभी द्वार बन्द हो जाते हैं तब प्रभू-कृपा का द्वार खुलता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दीनता का भजन

दया जो करनी अभी तो कर दो दयालु फिर कब दया करोगे।
कृपा जो करनी अभी तो कर दो कृपालु फिर कब कृपा करोगे।

दया तुम्हारी के हम भरोसे, ले नाम जीवन बिता रहे हैं।
उद्धार मेरा अभी तो कर दो, दयालु फिर कब दया करोगे॥

दया तुम्हारी अगर न होती, दिनों की सुनाई न होती।
मुझ दीन पर दया करो अब, दयालु फिर कब दया करोगे॥

पड़ी है नैय्या मझधार मेरी. नहीं है कोई अभी खिवैय्या।
पार करना अभी तो कर दो, दयालु फिर कब दया करोगे॥

जनम-जनम से बिगड़ी हमारी, साधक है अब तो शरण तिहारी।
बिगड़ी मेरी तो अभी बना दो, दयालु फिर कब दया करोगे।

**

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमन
तुलसी दया न छोड़िये जब लगि घट में प्रान।

**

सन्त वचन :—

मंगलमय विधान से दुःख बार-बार इसलिये आता है है कि सुख का प्रलोभन मिटे, रस की अभिव्यक्ति हो जो मानव मात्र की मौलिक मांग है।

(१) किसी प्राणी को अपने सुख के लिये दुःख मत दो।

(२) सब जीवों पर दया करना मानव का परम कर्त्तव्य हैं॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रार्थना

हे पतित पावन दीनबन्धु अब शरण में लीजिये।
हे दीन दुःखहारी दयामय, ऐसी कृपा अब कीजिये॥
भय हरण मंगल करण संकट निवारण आप हैं।
सृष्टि के उत्पत्ति, पालन, प्रलय कारण आप हैं॥
वेद भी महिमा तुम्हारी हे नाथ कह सकते नहीं।
निज जनों का तुम दयामय दुःख सह सकते नहीं॥
फिर कहो किस दोष से मुझ पर दया करते नहीं॥
दीनबन्धु क्यों हमारी अब यातना हरते नहीं॥
हे नाथ तुमको छोड़कर जग में हमारा कौन है।
प्रभु बिना हत भाग्य का जग में सहारा कौन है॥
हम निराश्रय हो गये अब आप ही आधार हैं।
बन रहे, सारे दुःखों के आज हम आगार हैं।
शुभ कर्म कीन्हाँ नहीं, ऐसा अधम हूं पातकी।
किससे कहूं जाऊँ कहां, साधक शरण है आपकी॥

सन्त वचन :–

प्रार्थना दुःखी हृदय द्वारा ही पूर्ण होती हैं सबसे निराश होकर ही कोई प्रार्थी हो पाता है। सब प्रकार से शक्तिहीन होकर शक्तिमान की शरणपन्न होना ही प्रार्थना है। तुम्हारे लिये क्या उचित है? यह परमेश्वर ही जानता है। अपने हित के लिये जो कुछ तुम न कर सकोगे वह उनकी ओर से पूर्ण होगा। अपना कर्तव्य पूरा करो प्रभू की अहैतुकी कृपा पर विश्वास रखो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री हरिशरणम् कीर्तन

मन भजलो अब तुम नाम यही । श्री हरिशरणम् श्री हरिशरणम्
मानव जीवन का सार यही । ” ”
भव सागर में पतवार यही । ” ”
अधमों का उद्धार यही । ” ”
सद्गुरु का है ज्ञान यही । ” ”
गज ने करी पुकार यही । ” ”
द्रोपदी ने टेर लगाई यही । ” ”
भक्तों का जीवन प्राण यही । ” ”
अक्षय सुख का भंडार यही । ” ”
तुम भज लो बारम्बार यही । ” ”
भक्ति मुक्ति का द्वार यही । ” ”
पावन प्रेमागार यही । ” ”
इस जग का सिर्जनहार यही । ” ”
परमारथ का द्वार यही । ” ”
साधक का आधार यही । ” ”

—o—

सन्त वचन :-

आत्म अनुभव ज्ञान की जो कोई पूछे बात ।
ज्यों गूंगा गुड़ खाय के कहै कौन मुख स्वाद ॥
जैसे पुतली लोन की गई थाह को लेन ।
आपन गल पानी भई कहे कौन सो बैन ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री राम-नाम की महिमा

राम का नाम लेकर जो मर जायेंगे।
वह तो संसार सागर से तर जायेंगे॥
मिलेगी शान्ति उनको ही जग में।
जो चाहों से जीवन को तज जायेंगे॥
उन्हीं को वह सुख सिन्धु स्वामी मिलेंगे।
जो दुःखियों को झोली को भर जायेगें॥
उन्हीं की बनी और बनती रहेगी।
जों विगड़ी किसी की बना जायेगें॥
जो दुखियों की सेवा करेंगे जगत में।
वही दीनबन्धु के घर जायेगें॥
ये न पूछो कि मर कर किधर जायेगें।
नाम लेते हैं उनके ही घर जायगें॥
मानो न मानो खुशी आपकी।
हम हैं साधक यह कह कर चले जायेगें॥

**

कविरा सब जग निर्धना धन वन्ता नहि कोय।
धनवन्ता सोई जानि ये जेहि राम नाम धन होय॥
"नानक दुःखिया सब संसारा, सो सुखिया जो नाम अधारा"
राम राम कहते रहो धरे रहो उर धीर।
कारज वही सूधारिहैं कृपा सिन्धु रघूवीर॥
राम राम कहते रहो जब लगि घट में प्रान।
कबहूं दीन दयाल के भनक परेगी कान॥
स्वाँस स्वाँस में राम कहु ब्रथा स्वाँस जनि खोय।
ना जाने यह स्वाँस को आवन होय न होय॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानव मोह निद्रा से जागो

उठो मानव आँख खोलो सो चुके हो अब न सोना ।
स्वर्ण घड़ियाँ यदि कदाचित खो चुके हो अब न खोना ।।
बहुत ही सुन्दर समय है जाग्रत जीवन बिताओ ।
कहीं भी कर्तव्य पालन में न तुम आलस्य लाओ ।।
सबल होकर बहुत दुर्बल हो चुके हो अब न होना ।।१।।
मोह निद्रा में तुम्हें जो दीखता यह मधुर सुख है ।
अरे यह सब स्वप्न है बस इसी सुख का अन्त दुःख है ।।
तुम अनेकों बार अब तक रो चुके हो अब न रोना ।।२।।
मिल रहा है वही तुमको जो कि पहले से दिया है ।
उसी का फल सामने है शुभाशुभ जैसा किया है ।।
बीज अनुचित कर्म के यदि बो चुके हो अब न बोना ।।३।।
एक होकर बन रहे हो तुम अनेकों वेषधारी ।
कभी स्वामी कभी सेवक कभी राजा औ भिखारी ।।
'पथिक' क्या-क्या अभी तक तुम हो चुके हो अब न होना ।।४।।

———

क्षण भंगुर जीवन की कलिका कल प्रातः को जाने खिली न खिली
मलयागिरि की शुचि शीतल मन्द सुगन्ध समीर मिली न मिली ।।
कलिकाल कुठार लिये फिरता तन नम्र से चोट झिली न झिली ।
ताते हरि नाम रटो रसना फिर अन्त समय में हिली न हिली ।।

संत वचन--

भगवान समाज सेवक को दुःखद संसार के रूप में, भक्त को प्रेम के रूप में, जिज्ञासु को ज्ञान के रूप में और प्रत्येक भावुक प्रेमी को भावानुसार विविध रूप में मिलते हैं ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सन्त संदेश

हम जो सन्देश सुनाते हैं, इसको सब कोई क्या जानें ।।
यह परम लाभ की बाते हैं इसको सब कोई क्या जानें ।
ऐसा जग में संयोग नहीं, हो जिसका कभी बियोग नहीं ।
ऐसा कोई सुख भोग नहीं, जिसके पीछे दुःख भोग नहीं ।।
भोगी बन सब पछिताते हैं, इसको सब कोई क्या जाने ।।१।।
है सफल उसी का नर जीवन जो जग में रहता त्यागी बन ।
जिसने जीता है अपना मन, दैवी सम्पत्ति ही जिसका धन ।।
वे महा पुरुष कहलाते हैं, इसको सब कोई क्या जाने ।।२।।
धन पाकर जो दानी न बने, जो सरल निरभिमाना न बनें ।
जो ईश्वर का ध्यानी न बने, जो आत्म तत्व ज्ञानी न बने ।।
वह जीवन व्यर्थ विताते हैं, इसको सब कोई क्या जाने ।।३।।
जो वस्तु व्यक्ति का दास नहीं, जिसमें दुर्व्यसन विलास नहीं ।
दोषों का जिसमें बास नहीं, दुःख आते उसके पास नहीं ।।
वह 'पथिक' महद पद पाते हैं, इसको सब कोई क्या जाने ।।४।।

सन्त वचन :--

सत्संग से मिले विवेक के प्रकाश में तुम संयोग के पीछे आने वाले वियोग को देखो । संयोग सदा न रहेगा, जो मिला है सब एक दिन छूट जायगा । समय के रहते रहते तुम संयोग की दासता से मुक्त हो जाओ । यही मानव जीवन की सफलता है ।

सत्संग का सुयोग मिलने पर भी यदि मनुष्य विचार न करेगा, अपने दोषों को न देखेगा, तो सैकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी दुखों एवं बन्धनों से मुक्ति न मिलेगी । सबसे बड़ा बुद्धिमान वही है जो हित का साधन जानता है ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जिज्ञासा

कल्याण दु:खी मानव का भगवान न जाने कब होगा।
जिससे भव भ्रान्ति मिटा करती वह ज्ञान न जाने कब होगा।।
जिससे निज दोष दिखा करते, पापों अपराधों से डरते।
उस सद् विवेक का मानव में सन्मान न जाने कब होगा।।
अच्छे दिन बीते जाते हैं गुरुजन सब विधि समझाते हैं।
भोगस्थल से योगस्थल में प्रस्थान न जाने कब होगा।।
शीतलता जिससे आती है सारी अतृप्ति मिट जाती है।
वह नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा पर पान जाने कब होगा।।
यद्यपि हैं सभी सुलभ साधन सोचते यही हैं मन ही मन।
जिससे कि पथिक प्रभु मय होवे वह ध्यान न जाने कब होगा।

**

एक बार बस एक बार मन मोहन छवि दिखला देना।
मेरे मन मन्दिर में बसकर बंशी मधुर बजा देना।।
अज्ञान तिमिर ने घेरा हैं दोषों ने किया बसेरा है।
सद्गुरु बन कर हे जीवन धन, गीता ज्ञान सुना देना।।
मोह मगर ने पकड़ लिया है यह जीवन ऐसा जकड़ दिया है।
गज का फन्द छुड़ाया तुमने, मेरा फन्द छुड़ा देना।।
ज्ञानी जैसे जग में रहते, योगी योग ध्यान को करते।
जीवन अपना पावन करते, वह योग विधान सिखा देना।।
मुझमें नहि कोई शक्ति प्रभो, अब दे दो अपनी भक्ति प्रभो।
कुछ रह न जाये आसक्ति प्रभो, अब साधक को अपना लेना।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

॥ प्रेरणा ॥

तेरी स्वांसा है अनमोल, मनुआ हरी हरी बोल।
माल पराये को अपना माना, इस भ्रम में तू रहा भुलाना।
सभी छोड़ कर एक दिन जाना, इस विचार में तोल।१।
जैसा कर्म करोगे जग में, वैसा ही फल पाओगे।
राम भजन यदि नहिं है कीन्हा, तो यम के घर ही जाओगे॥
ज्ञानामृत का पान तू करले, विष का बिन्दु न घोल।२।
स्वप्न वासना यह जग है, जिसको तू अपना २ कहता है।
मोह नींद तज कर जागो, झूठे सुख से अब तुम भागो॥
गुरु चरनो में अब तुम लागो, यही जीवन का मोल।३।
इतनी बात हमारी मानो, अब तुम अपने को पहिचानो।
देह इन्द्रियों का संग छोड़ो, विषयों से अब मुख मोड़ो॥
साधक पीलो नाम सुधा रस, है राम नाम अनमोल।४।

सन्त वचन :--

१—जो अपने मन को चेला बना लेता है, वही गुरु की शरण लेकर गुरु हो जाता है। देह की पूजा को गुरु पूजा न मानो। गुरु आज्ञा को पूर्ण करना ही सच्ची पूजा है। अपनी लघुता को गुरुता में लीन करने के लिये गुरु आज्ञा का पालन करना गुरु उपासना है।

२—भगवत् भजन के लिये मन की पवित्रता और स्वस्थ शरीर होना परमावश्यक हैं।
मन के पवित्र होने पर ही स्थिरता प्रसन्नता निर्भयता आती है। प्राण शक्ति प्रबल होती है।

३—शरीर भगवान के निवास का मन्दिर है। भगवान के रहने वाले मकान को भोगी बन कर मत बिगाड़ो।

४—यदि भगवान को प्राप्त करना चाहते हो तो, दुखियों की सेवा करो

५—किसी को अपना न मानने से ही तुम मुक्त हो सकोगे।

६—एक भगवान को ही अपना सर्वस्व मान कर भक्त बन सकोगे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन क्या है ?

वह जीवन क्या जिस जीवन में जीवन को मुक्त बना न सके।
वह अज्ञानी अभिमानी है जो मन का मोह मिटा न सके॥
कोई बल मद में फूल रहे, ऊँचे पद पाकर झूल रहे।
लेकिन वह शक्ति निरर्थक है जो काम किसी के आ न सके॥

जो भ्रम वश भोगा सक्त बने, जो अपने मन को भक्त बने।
वह सबसे यदि न विरक्त हुये, सत पथ में पैर बढ़ा न सके॥

जिस संगति से सद्ज्ञान न हो, कर्त्तव्य धर्म का ध्यान न हो।
हम उसे कुसंगति क्यों न कहें, जो हमें प्रकाश दिखा न सके॥

मटती है जिससे भ्रान्ति नहीं, मिलती है जिससे शान्ति नहीं।
ऐ पथिक उसी का त्याग करो, जो प्रियतम तक पहुंचा न सके॥

सन्त वचन :--

१—प्रेम पूर्वक जिसका जीवन दूसरों की पूर्ति के लिये है वही मानव जीवन है। दोषों का ज्ञान और उन्हें मिटाने का प्रयत्न मानवी प्रकृति में होता है। मानव ही त्याग, ज्ञान और प्रेम को पूर्ण कर सकता है।

२—वह वीर हैं जो दूसरों पर विजय प्राप्त करता है किन्तु जो अपने मन बुद्धि को स्ववश में रखता है वह तो महात्मा है।

३—जीवन की मृत्यु नहीं, मृत का कोई जीवन नहीं। अनित्य अर्थात् मदा रहने वाला शरीर नित्य जीवन की अनुमति का साधन है। हम कुछ बनना या होना चाहते हैं परन्तु जो है वह देखना नहीं चाहते। जीवन नित्य वर्तमान में ही है। जिसे अपना कुछ नहीं दीखता वही मोह ममता रहित हो सकता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

॥ * जीवन दर्शन * ॥

एक दिन तो सबको ही जाना पड़ेगा।
भजन के बिना अन्त में पछताना पड़ेगा ॥
जिस तन को बचाया था भोगों के खातिर।
उसे लकड़ी में एक दिन जलाना पड़ेगा ॥
लाखों करोड़ों कमाये थे हमने।
उसे एक दिन सब छोड़ जाना पड़ेगा ॥
जो कहते थे जग में तुम्हारा हूं भाई।
अब तो मेरे नहीं हैं मानना पड़ेगा ॥
सताया है दुखियों को यदि आके मद में।
तो बदले में दुःख ही उठाना पड़ेगा ॥
आके सुखा शक्ति में किया पाप हमने।
तो निश्चय है यम लोक जाना पड़ेगा ॥
जो मिला है उसे अपना न मानो।
तब प्रभु को ही अपना बनाना पड़ेगा।
अगर चाहते हो शान्ति से जीना।
तो चाहों को एक दम घटाना पड़ेगा ॥
अमर होके रहना है यदि जगत में।
तो अहं को सदा ही मिटाना पड़ेगा ॥
विवेकी बनना चाहते हो अगर तुम।
तब तो सत्सग में ही जाना पड़ेगा ॥
अगर मुक्त होना है तुम्हें बन्धनों से।
तब तो गुरु ज्ञान को ही अपनाना पड़ेगा।
अगर भक्त बनना तुम्हें है "साधक"।
तब तो प्रभु की शरण में ही जाना पड़ेगा ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

॥ प्रेरणा ॥

मानव ! प्रभु गुण गाते न क्यों तुम ।
सत् की शरण में आते न क्यों तुम ॥
जिनको तुम अपना समझे हो,
सदा काम यह आ न सकेंगे !
गुरु विवेक बिन भव बन्धन से,
कोई तुम्हें छुटा न सकेंगे ।
मन का मोह मिटाते न क्यों तुम ।
मानव ! प्रभु गुण गाते न क्यों तुम ॥
जैसा भी चिन्तन होता है,
चित्त उसी मय बन जाता है ।
जिसकी चाह प्रबल होती है,
प्राणी उसको ही पाता है ।
सत्य से प्रेम बढ़ाते न क्यों तुम ।
मानव ! प्रभु गुण गाते न क्यों तुम ॥
जिसकी सत्ता में सब प्राणी,
इच्छित सुख पाते रहते हैं ।
जिसका याद दिलाने के हित,
अगणित दुःख आते रहते हैं ।
दुःख से लाभ उठाते न क्यों तुम.
मानव ! प्रभु गुण गाते न क्यों तुम ॥
काम क्रोध मद अहंकार से.
किसका हृदय नहीं जलता है ।
भोगी बनकर कौन जगत में,
अपने हाथ नहीं मलता है ।
"पथिक" त्याग अपनाते न क्यों तुम,
मानव ! प्रभु गुण गाते न क्यों तुम ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

*** सत्य निर्णय ***

संसार में मानव वही सतधर्म जो अपना सके।
जिसमें कि सत्य विवेक हो मन के विकार हटा सके।
ज्ञानी वही जो सर्वदा, दुःख द्वन्द में भी शान्त हो।
प्रतिकूलता कितनी ही हो, समता न कोई डिगा सके॥
प्रेमी वही, अपने लिये, जो कुछ नहीं हो चाहता।
निष्काम सेवा भाव से, प्रियतम को जो रिझा सके॥
त्यागी वही, जो विरक्त है, जो लोभ मोह से मुक्त है।
जो कामना के साथ ही, देहाभिमान मिटा सके॥
जो दूरदर्शी सन्तजन, सौभाग्यवान उसे कहें।
जो भाग्य हीनों के लिये, सुखदान करता जा सके॥
सम्पत्तिवान वही, जहाँ, दैवी गुणों का राज्य हो।
शीतल हृदय उसका है जो तृष्णा की आग बुझा सके॥
सबसे बड़ा समझो उसे, जिसकी बड़ी छाया रहे।
सच्चा सुखी वह है कि जो दुखियों के दुःख बटा सके॥
है शक्तिमान वही यहाँ, आता है सबके काम जो।
परमार्थी वह है "पथिक" जो शांति शाश्वत पा सके॥

सन्त वचन :–

सत्य ही धर्म, सर्वस्व, जीवनाधार है। सत्य ही सत्त्व का सत्व है, निर्बल का बल और प्राण प्रतिष्ठापक है। सत्य से ही क्रिया सफल होती है। महर्षि पतंजलि ने लिखा है—'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्'। सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यों ज्यों सेवा की जाती है, त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते हुये दिखाई देते हैं। सत्य जीवन की जितनी रक्षा करता है इतनी और कोई कर नहीं सकता।

लोक में सत्य की जीत होती है। "सत्यमेव जयते"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन में दुःख का स्थान

दुःख ही मानव की सम्पत्ति है, जो मानव को नहिं भाता है।
सुख भाता सुख नहिं रहता, जो भाता है वह नहिं होता है॥
सुख के पीछे निश्चय दुख है, दुःख के पीछे सुख आता है।
सुख में मानव प्रभु को भूले, दुःख ही याद दिलाता है॥
सुख के पीछे क्षितिज अन्धेरा, दुःख में निश्चय होय सबेरा।
सुख में जीवन पथ में भटके, दुःख ही मार्ग दिखाता है॥
कोई सुख में ऐसा फूला, कोई दुख में ऐसा भूला है।
सुख भी झूठा दुःख भी झूठा, झूठा जग का सबका नाता है॥
सुख में सेवा को तुम कर लो, दुख में त्याग से जीवन भर लो।
सुख दुख जीवन का साधन है, यह सद्गुरु ज्ञान बताता है॥
जिस दुख को तुम नहीं चाहते, बिनु चाहे आ जाता है।
सुख के पीछे दौड़ रहे तुम, देखो सुख भागा जाता है॥
मन चाही हो जाने पर, देखो दुख आ जाता है।
चाह नहीं जब पूरी होती, तब देखो दुःख सताता है॥
दुःख देने से दुःख पाओगे, बच सकते हो केवल सुख देकर॥
वह अटल प्रकृति है विधान, सुख से दुःख २ से सुख होता है।
जिसको तुम अपना कहते हो, वह नहीं तुम्हारा है देखो॥
लाखों की सम्पत्ति जोड़ी पर संग न कोई ले जाता है॥
बड़े भाग्य से नर तन पाया, झूठे सुख में क्यों उलझाया।
श्री राम नाम से जीवन भर ले, जो जीवन का सुख दाता है॥

सन्त वचन :-

जितनी अधिक कठोरता हृदय में होती है उतनी ही दुःख रूपी ताप की आवश्यकता पढ़ती है। दुःखरूपी आग वहाँ जलती है जहाँ दोष रूपी ईंधन होता है। दुःख से न डरो, दोषों स सावधान रहो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

* दुखियों की पुकार *

दशा दुखियों की हे भगवन् बना दोगे तो क्या होगा।
उन्हें सन्मार्ग का मारग बता दोगे तो क्या होगा॥
अजामिल गीध गणिका को अगर पावन बनाया है॥
उसी पावन में पतितों को मिला लोगे तो क्या होगा॥
उतारा भार तुमने है जगत में प्रेमी भक्तों का।
मेरा भी भार हे! भगवन् उतारोगे तो क्या होगा॥
सुनाया ज्ञान गीता का, मिटाया मोह अर्जुन का।
मेरा भी मोह हे भगवन् मिटा दोगे तो क्या होगा॥
जगत में लोग यह कहते तू मेरा है तू मेरा है।
मुझे चरनों का अब सेवक बना लोगे तो क्या होगा॥
जिन चरनों ने तुम्हारे अधम पापी उबारे हैं।
उन्ही चरनों में साधक को मिला लोगे तो क्या होगा॥

चेतावनी

मन पछितै है अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाय हरि पद भजु कर्म बचन अरु हीते॥
सहसबाहु दस बदन आदि नृप बचे न काल बली ते।
हम-हम करि धन धाम संवारे अन्त चले उठि रीते॥
सुत बनतादि जानि स्वारथ रत न करु नेह सब हीते।
अन्तहुं तोहि तजेंगे पामर तू न तजै अब हीते॥
अब नाथहि अनुराग जागु जड़ त्यागि दुरासा जी ते।
मिटति न काम अग्नि कहुं तुलसीं विषय भोग बहु घीते॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हृदय की व्यथा

भगवान जगत में दुखियों का दुख दूर न जाने कब होगा।
जिन दोषों से दुख होता है उनका त्याग न जाने कब होगा॥

यद्यपि मिले सभी साधन हैं जिनको अपना कहते हैं।
दीनों दुखियों की सेवा में उपयोग न जाने कब होगा।
नर तन हमें निरोग मिला, निष्काम पुण्य का योग मिला॥

मन कुसंग को छोड़ न पाता. सत्संग न जाने कब होगा।
जिससे सब भ्रांति मिटा करती जिससे चिर शांति मिला करती

जिससे सद्गति होती है, वह सद्ज्ञान न जाने कब होगा।
मन के भोगी तन के रोगी, यह जीवन व्यर्थ बिताया है॥

पराधीन होकर जीते जग में स्वाधीन न जाने कब होगा।
पाप करत दिन रैन बिताये, अन्त समय कुछ साथ न जाये॥

भव सागर में डूब रहे हैं. उद्धार न जाने कब होगा।
मानव तन अनमोल मिला है, सत्संगति का योग मिला है॥

जिससे भगवान मिला करते हैं वह ध्यान न जाने कब होगा।
गुरु जन सब विधि समझाते हैं, साधक समझ न पाते हैं॥

नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा रस, पर पान न जाने कब होगा।

सन्त वचन :-

स्वरूप के अज्ञान वश अपने से भिन्न जो कुछ है उसमें सुख मानने के कारण उसकी चाह होती है। जब तक सुख के अन्त में पूर्ण दुःख नहीं होता तब तक सुख की चाह का त्याग नहीं होता जिसे आनन्दानुभव होता है वही सुख की चाह का त्याग कर पाता है। जो पा जाता है वही संसार से मिलने वाले सुख की चाह को छोड़ देता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रेरणा

मानव देखो जग में अधिकार रहेगा कितने दिन।
परिवार रहेगा कितने दिन, घर बार रहेगा कितने दिन।
जिसको तुमने अपना माना, वह सब है एक दिन छूट जाना।
साथ न कुछ भी जायेगा, तब अभिमान रहेगा कितने दिन।
अगणित अभिमानी जग में आये जीवन यूँ ही व्यर्थ गंवाये।
चुन २ करि महल बनाये, पर इनका आधार रहेगा कितने दिन
झूठ कपट कर माया जोडी माया, ममता, कभी न छोड़ी।
जोड़-जोड़ कर भरा खजाना, पर भंडार रहेगा कितने दिन।
छोड़ो जग की झूठी माया, सतगुरु ने ज्ञान बताया।
राम नाम का करो सहारा, परिवार रहेगा कितने दिन।
तुम ध्यान धरो अविनाशी का, अब नाम जपो सुखरासी का।
साधक, देखो इस जग का- व्यवहार रहेगा कितने दिन।

अब से शुभ करना सीख लो, पापों से डरना सीख लो।
जिसको तुमने अपना माना, एक दिन सब कुछ है छूट जाना।
सब की ममता का त्याग करो अब ज्ञानी बनना सीख लो॥
दोषों के हो अब त्यागी बनकर प्रभु के ही अनुरागी बन कर।
कभी किसी से कुछ मत चाहो त्यागी बनना सीख लो॥
जग को अपना तुम मत मानो परमेश्वर को तुम पहिचानो।
उसी प्रभू को अपना मानो प्रेमी बनना सीख लो॥
देखो जग की झूठी माया इस में जीवन क्यों उलझाया।
जग से नाता तोड़कर भव सागर तरना सीख लो॥
जग में जो कुछ पाओगे सब छोड़ यहीं पर जाओगे।
दीन दुःखी की सेवा कर के सेवक बनना सीख लो॥
जब अन्त समय आ जायेगा फिर क्या तुमसे बन पायेगा।
साधक जग में जन्म न हो अब ऐसा मरना सीख लो॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नाम महिमा

तू राम भजन कर भाई ।
सुर दुर्लभ मानव तन पाया अब क्यों देर लगाई ।।
अजामील से पापी तर गये, तर गये सदन कसाई ।
कोर पढ़ावत गणिका तर गई, तर गई मीराबाई ।।
त्रेता भय रावण से राजा स्वर्ण की लंका पाई ।
मैं मेरी करि चले गये, सग न कुछ भी जाई ।।
स्वप्ने में एक महल बनाया, चुनि-चुनि इंट लगाई ।
जाग पड़ा तब कुछ नहिं पाया, देखो मेरे भाई ।।
जिनको तुम अपना कहते हो, सुत दारा अरु माई ।
गुरु विवेक बिनु बन्धन पे, कोई नहिं सकें छुड़ाई ।।
राम भजन बिनु सुन ले बन्दे, यमपुर बांधा जाई ।
साधक सब आश छोड़कर, भजलो श्री रघुराई ।।

कितने सुन्दर हैं यह नाम, चाहे कृष्ण भजो या राम ।।
मानव जीवन का यह सार, दुखियों का है प्राणाधार ।
सभी सुखों का यह भंडार, भवसागर में यह पतवार ।।
पतितों का उद्धारक नाम, चाहे कृष्ण भजो या राम ।।१।।
परम शक्ति का भंडार यही हैं, भक्ति-मुक्ति का द्वार यही है
भक्तों का आधार यही है, पावन प्रेमागार यही है ।।
कौशल्या के प्यारे राम, चाहे कृष्ण भजो या राम ।।२।।
बाल्मीकि ने नाम पुकारा, ध्रुव ने इसका लिया सहारा ।।
शंकर का यह प्राण अधारा, सब भक्तों का है यह प्यारा ।
यशुदा के हैं प्यारे श्याम चाहे कृष्ण भजो या राम ।।३।।
अब क्यों देर लगाते हो, आलस्य में समय बिताते हो ।
तुम शरण न प्रभू की आते हो क्यों जीवन व्यर्थ गँवाते हो
साधक का है जीवन नाम, चाहे कृष्ण भजो या राम ।।४।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पतित की पुकार

हे नाथ अब तो निभाना पड़ेगा।
पतितों को पावन बनाना पड़ेगा॥
अजामील, गज को उबारा है तुमने।
ध्रुव प्रह्लाद को, तारा है तुमने॥
राम कृष्ण रूप धारा है तुमनें।
पृथ्वी का भार उतारा है तुमने॥
मेरे सिर पर है पापों का बोझा।
उसे भी तो अब हटाना पड़ेगा॥१।
द्रोपदी की लाज बचाइ है तुमनें।
सभा मध्य साड़ी बढ़ाई है तुमनें॥
करमा की खिचड़ी खाई है तुमने।
भक्तों की बिगड़ी बनाइ है तुमने॥
जनम जनम से है बिगड़ी हमारी।
बिगड़ी को अब तो बनाना पड़ेगा।२।
दुर्योधन का मान घटाया है तुमने।
साग विदुर घर खाया है तुमने।
असुरों का किया सफाया है तुमने।
भक्तों का अपनाया है तुमने॥
शरण में तुम्हारी, आया हूँ अब मैं।
अब तो मुझे भी अपनाना पड़ेगा।३।
अर्जुन का रथ चलाया है तुमने।
गीता ज्ञान सुनाया है तुमने।
सुग्रीव का राज्य दिलाया है तुमने।
तारा का अज्ञान मिटाया है तुमने॥
अनेक अधमों को पावन बनाया।
तो साधक को पावन बनाना पड़ेगा॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रार्थना

शरणागतपाल कृपाल प्रभो हमको इक आस तिहारी है।
तुम्हरे सम दूसर और कोऊ नहिं दीनन को हितकारी है।।
सुधि लेत सदा सब जीवन की अतिशय करुणा उरधारी है।
प्रतिपाल करौ विनही बदले अस कौन पिता महतारो है।।
भूलि अहि हमहीं, तुमको तुम तो हमरी सुधि नाहिं बिसारी है।
सब भाँति समर्थ सहायक हो तब आश्रित बुद्धि हमारी है।।
जब नाथ दया करि देखत हो, छूटि जात व्यथा संसारी है।
भगवान कृपा करिये अब साधक शरण तुम्हारी है।।

भगवान तुम्हारी जय होवे--जगदीश तुम्हारी जय होवे।
जब जीव शरण में आ जाता, तब निर्भय पद को पा जाता।।
ससार न तब कुछ कर पाता, तब विष भो अमृत बन जाता।।
हे राम तुम्हारी जय होवे, घनश्याम तुम्हारी जय होवे।।१।।
जब गज ने टेर सुनाई थी, फिर जरा न देर लगाई थी।
द्रोपदी की लाज बचाई थी, जब शरण तुम्हारी आई थी।।
गोविन्द तुम्हारी जय होवे, गोपाल तुम्हारी जय होवे।।२।।
भक्त प्रहलाद उवारा तुमने, तिलक विभीषण सारा तुमने।
राम कृष्ण तनु धारा तुमने पृथ्वी का भार उतारा तुमने।।
हे नाथ तुम्हारी जय होवे, हे कृष्ण तुम्हारी जय होवे।।३।।
तूम्हीं एक आश्रयदाता हो, दुर्गति में सुगति विधाता हो।
तुम दिव्य प्रकृति निर्माता हो, सब के जीवन दाता हो।।
अखिलेश तुम्हारी जय होवे, विश्वेश तुम्हारी जय होवे।।४।।
अब दे दो ऐसी शक्ति प्रभो, बस रहे निरन्तर भक्ति प्रभो।
मिट जाये सब आसक्ति प्रभो, साधक बन जाये भक्त प्रभो।।
सर्वेश तूम्हारी जय होवे, भूवनेश तुम्हारी जय होवे।।५।।
भगवान तुम्हारी जय होवे। जगदीश तुम्हारी जय होवे।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाग्रति सन्देश

उठो उठो ए सोने वालो, रैन नहीं अब हुआ सवेरा ।।
ज्ञान भानु का उदय आ है, अज्ञान तिमिर का उठ गया डेरा ।
सुर दुर्लभ तन पाकर भी, आलस्य प्रमाद में समय विताया ।
स्वच्छन्द बना करके मन को, विषय सुखों में है भटकाया ।
जब शक्ति क्षीण हो गई तभी, आय बुढ़ापे ने है घेरा ।१।
कौड़ी-कोड़ी माया जोड़ी, चुन-चुन कर महल बनाया ।
वस्तु व्यक्ति की करी गुलामी, अन्त समय कुछ काम न आया ।
सदगुरु चरण पकड़ ले बन्दे, भव सागर का है यह वेरा ।२।
मोह निशा में सब जग सोवे, स्वप्ने की सी यह माया ।
जब छूने को हाथ बढ़ावे, जाग पड़े कुछ नहि पाया ।
सदगुरु ज्ञान समझ ले बन्द, जग में क्या है तेरा ।३।
राम नाम का करो सहारा, त्याग विषय कीं आसा ।
सुर दुलंभ सुख मिले जगत में, अन्त अमर पुर वासा ।
सदगुरु कृपा हुई साधक पर, राम नाम धन मेरा ।४।

मानव जीवन का सार

पगले राम नाम तू जप ले,
जनम जनम से भटक रहा है सुख दुःख में तू अटक रहा है
श्री राम नाम का ले के सहारा भव सागर से अब तर ले ।।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, माया ममता कभी न छोड़ी ।
साथ न कुछ भी जायेगा, यह सतगुरु ज्ञान पकड़ ले ।।
विषय सुखो में क्यों उलझाया, जीवन यू हीं व्यर्थ गवाया ।
स्वांस-स्वांस में नाम को जप ले, झोली अपनी भर ले ।।
अजाभील ने नाम पुकारा, ध्रुव ने इसका लिया सहारा ।
सुआ पढ़ावत गणिकातारी उसी नाम को रट ले ।।
गांधी जी का सबसे प्यारा-सब भक्तों का नाम अधारा ।
साधक अब तुम देर करो मत-राम नाम से हृय को भर ले ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पतिव्रता दुःखी नारी की प्रार्थना

मेरी राखो लाज गिरधारी, मैं दुःखिया शरण तिहारी।
पति बिनु अंधकार में है अब मेरी जीवन नैय्या ॥
डूब रही है बीच धार में तुम बिनु नहीं खिवैय्या।
जाऊँ कहाँ तजि चरन तिहारे किसको विपद सुनाऊँ॥
तुम विनु कौन हमारा साथी किसको अब अपनाऊँ॥
आप भी यदि नहीं सुनेगें फिर कहाँ जाऊँगी मैं।
भव दुःख से अब नाव कसे पार कर पाऊँगी में।
द्रोपदी की लाज राखी-ग्राह से गज को बचाया॥
प्रहलाद को तुमने बचाया ऐसी करी तुमने दाया।
मुक्त अनाथ के नाथ तुम्हीं हो सुन लो विनय हमारी॥
दुःख सागर से मुझे बचाओ मैं दुःखिया शरण तिहारी।

————

धिक्कार है जीना विना पति के नारी का पुछैय्या कोई नहीं।
हम जोली हैं सब मतलब की यहाँ राम गवैय्या कोई नहीं॥
पति ही से पति इस तन की है बिनु पति, पति हरगिज रहती नहीं।
बिनु पति के विपति है जगत में घनी यहाँ दुख बटैया कोई नहीं॥
बिनु पति के न सास बहू कहतो विनु पति के ससुर को न भावे बहू।
है कोइ न साथी बिना पति के पितु मातु व भइया कोई नही॥

विधवा नारी का कर्त्तव्य :-

हिन्दू धर्म में विधवा के लिये तप, त्याग, संयम आदि के कर्त्तव्य धर्म के रूप में पालन करने का बड़ा कठोर विधान है। विधवा का जीवन संयम और त्याग में है। अपनी सुविधा का ख्याल न रखकर सादा जीवन व्यतीत करना और सपरिवार की सेवा करना परम कर्त्तव्य है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

कृपा है तभी ऐसा अवसर मिलेगा।
जों अब कर न पाये तो कब कर मिलेगा।
गुरुजन जगाते हैं उठो जीव जागो।
भोग भूमि महा दुखद चलो शीघ्र त्यागो।
देते रहो जो भी बने किसी से न माँगो।
समय निकल जाने पर फिर न घर मिलेगा ।।
जगत में सभी को काल खा रहा है.
कुछ गोद कुछ मुख मध्य जा रहा है,
कौन है जो काल से बच पा रहा है,
ध्यान रहे तुम्हारा भी समय आ रहा है,
शरणागत भक्त को अभय वर मिलेगा ।।
जहाँ तक शक्ति पर उपकार करना,
दया प्रेम भाव से सबको प्यार करना,
असत् से विमुख हो सद्विचार करना,
महा पुरुषार्थं पञ्चकोष पार करना,
तभो तुम्हें क्षर के परे अक्षर मिलेगा ।।
तुम्हीं बुद्धियोगि बनो नित्य गुरू ज्ञान लो.
अपना नहीं है कुछ जग में ये जान लो,
एक परमात्मा को सर्वस्व मान लो,
गुरु ज्ञान द्वारा निज रूप पहिचान लो,
'पथिक' भव सिन्धु से तभी तर मिलेगा ।।

सन्त वचन :—

सत्य के लिये, धर्म के लिये, पुण्य दान के लिये, त्याग एवं प्रेम के लिये, अवसर पर सावधान रहो। आलसी प्रमादी, सुखासक्त तथा अहंकार से विमूढ़ बुद्धि वाले अवसर का सदुपयोग नहीं कर पाते। शक्ति के रहते ही ज्ञान ध्यान प्रेम को पूर्ण करो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन की सफलता

जगत में जीवन सफल है उनका, जो सत्य पथ में ही जा रहे।
बने अभागी वह हैं जगत में, जो दोष अपने बढ़ा रहे हैं॥
जितने दुःख होते हैं जग में, वह निज दोषों के कारण ही।
बने हैं साधक वही जगत में, जो दोष अपने मिटा रहे हैं॥
जो मिला है तुम्हें जगत में, एक दिन सब छूट जायेगा।
वही सयाने रहे हैं जग में, जो दान करते ही जा रहे हैं॥
उन्हीं को अज्ञानी कहें जगत में, जगत से कुछ जो करते आशा।
बने विवेकी वही जगत में, जो जग से आशा हटा रहे हैं॥
मुक्त होकर रहेंगे जग में जो अपना कुछ भी नहीं समझते।
हुये विरागी वही जगत से, जो आसक्ति ममता मिटा रहे हैं।
निष्काम प्रेमी उन्हीं को कहिये, किसी से कुछ भी न चाहते हों।
वही है प्रेमी जगत में साधक, जो प्रभु को अपना बना रहे हैं॥

उपासना

मन्दिर तो वही जामें तू वास करे,
यासों न उत्तम और कोई ठिकानो है।
आसन तो वही जो उखड़ें न तीनों काल,
जाग्रत स्वप्न में ज्यों का त्यों जमानो है।
माला तो वही जो गुप्त फिरे आप ही आप,
काऊ सुन लेइ झगड़ा मन मानो है।
देव तो वही जाको कहें तू कहे आत्म देव,
श्रुति नें याही को परम देव मानो है॥

सन्त वचन :--

जहाँ तक भोग है वहाँ तक रोग का दुःख देखना ही पड़ेगा जहाँ तक अज्ञान है वहाँ हानि, वियोग अपमान, मृत्यु के दुःख से नहीं बच सकते हो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सीता राम की महिमा

सीता-राम सीता-राम सीता-राम सीता-राम बोलो।
प्रथम पूज्य गनपति जो यह नाम सुनाया था।
इसी नाम के बल पर देखो, प्रथम पूज्य पद पाया था
एक बार तुम प्रेम से बोलो, सीता राम-सीता राम ॥१॥
अजामिल ने धोखे से नारायण नाम पुकारा था।
यमदूतों ने छोड़ दिया फिर हरि के धाम सिधारा था॥
प्रेमी जन तुम भूल न जाना, सीता राम, सीता राम॥२॥
इसी नाम के बल पर देखो शिव ने था विष पान किया।
इसी नाम का ले के सहारा, ऋषि ने सागर सोख लिया।
सब मिलकर अब यही पुकारो, सीता राम-सीता राम॥३॥
पाँच वर्ष के ध्रुव ने देखो हरि का ध्यान लगाया था।
वालमीकि ने इसी नाम से जीवन सफल बनाया था॥
साधक अब तुम रटते रहना, सीता राम-सीता राम ॥४॥

"प्रभु नाम महिमा"

दो बार जाये द्वारिका, त्रिवेणी जाये तीन बेर।
चार बार काशी गंग, अंग के नहाये ते॥
पाँच बार पशुपति नाथ, छः वार नीमषार।
सात वार पुष्कर जी के आचमन कराये ते॥
रामेश्वर, जगन्नाथ, बद्री और केदारनाथ।
दसहुं सुमेरु सौ-सौ बेरि फेरि लाये ते॥
जते फल होंहि कोटि तीरथ स्नान किये।
तेते फल होंहि एक प्रभु "नाम" गाये ते॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

मन भजले बारम्बार यही, श्री हरिशरणम् श्री हरिशरणम् ।
भवसागर में है पतवार यही, श्री हरिशरणम् श्री हरिशरणम् ।
बालापन सब खेल गंबायो, जवानी में तिरिया संग भायो ।
देखि बुढ़ापा तू घबड़ायो, तबहुँ मन तू चेत न लायो ।।
तजि कुसंग सत्संग बैठि भज, श्री हरिशरणम् श्री हरिशरणम् ।
पके केश कर हालन लागे, तऊ न तजा तू भोग अभागे ।।
परमारथ पथ विमुख अभागे, सन्त चरण में नहिं अनुरागे ।।
मोह नींद को त्याग के भज ले, श्री हरिशरणम् श्री हरिशरणम् ।
सुख स्वारथ के वस में होके, कर न सके कुछ भी उपकार ।
कौड़ी-कौड़ी जोड़ जगत में, छोड़ चले सब यम के द्वार ।।
सद्गुरु का है सार यही, श्री हरिशरणम् श्री हरिशरणम् ।।
सुख की तृष्णा का त्याग करो, अब न किसी से राग करो ।।
अब भोगों से वैराग्य करो, श्री चरणों में अनुराग करो ।
जीवन का है आधार यही, श्री हरिशरणम्, श्री हरिशरणम् ।
तुम प्रेम करो अबिनाशी से, मिल जाओ सब घटवासी से ।
साधक डरो यम फाँसी को, धरि ध्यान सहज सुख रासो को ।।
अक्षय सुखका भण्डार यही, श्री हरिशरणम् श्री हरिशरणम् ।

—:०:—

सन्त वचन :—

करै बुराई सुख चहे कैसे पावे कोय ।
बोये बिखा आक का, आम कहाँ ते होय ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ज्ञानी

आये को हर्ष नहीं, गये का शोक नहीं,
ऐसा निर्द्वन्द हूँ समझने की बात है।
देह गेह मेरे नहीं, लक्ष्मी के चेरे नहीं,
हरि जू सों कछु बसात है॥
लोक की यह रीति है, मानने की प्रीति है,
हार है न जीति है जाति है न पांति है,
निर्भय यही ज्ञान है, सत्य भगवान हैं.
और कहा ज्ञानी के सींग जम जात है॥

अन्तिम प्रार्थना

इतती कृपा तो कर दो, जब प्राण तन से निकले।
हो राम नाम मुख में जब प्राण तन से निकले॥
घर में न हो न बन में, न हो किसी वतन में।
वृन्दावन की रज में यह प्राण तन से निकले॥
माता पिता न कोई, भ्राता सखा न कोई।
मेरो साँवला निकट हो, जब प्राण तन से निकले॥
गीता का ज्ञान सुनकर, चरणों में ध्यान धर कर।
बंशी की तान सुनकर यह प्राण तन से निकले॥
ऐसी दे दो शक्ति प्रभो, न रहे कुछ आसक्ति प्रभो।
साधक बन जाये भक्त, प्रभो, जब प्राण तन से निकल॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानव की भूल

मो सम कौन अधम जगमाहीं।
संतसग कबहुं नहिं कीन्हों, पाप करत निसि दिन जाहीं।
उदर भरयो ज्यों कूकर सूकर अरु विषयन को धायो।
भ्रमत फिरयो झूठे सुख पीछे तबहुं चन नहिं पायो ।।
काम क्रोध मद लोभ में फँस करि जीवन व्यर्थ बिताओ।
भोगी बन करि रहे जगत में कबहुँ न हरि गुन गायो ।।
हम हम करि धन धाम संवारे मैं मेंरी में अटकायो।
पड़ा रहा सब माल खजाना, अन्त समय पछितायो।।
हौं हार्‌यो करि कोटि जतन, मन नहिं समझे समझायो।
साधक सब आश छोड़िकरि अब शरण प्रभु की आयो ।।

कीर्तन

जय रघुनन्दन जय घनश्याम, हे दुख:भंजन तुम्हें प्रणाम।
हम आये हैं शरण तिहारी, अब सुनलो विनय हमारी।
दु:खियों के तुम दु:खहारी, भक्त जनों के जीवन प्रान।
दशरथ राज दुलारे राम, यसुधा के तुम प्यारे श्याम ।।१।।
मातु, पिता, भगनी. सुतनारी, स्वारथ बस सब बने पुजारी।
तुम समान नहिं कोउ हितकारी, भव-भय भंजन सीताराम।
गोपी बल्लभ राधेश्याम, जानकी बल्लभ सीताराम ।।२।।
शरणागत के पालक तुम हो, अज्ञान तिमिर के नाशक तुम हो
अधमों के उद्धारक तम हो, भक्तों के मन रंजन श्याम।
इतनो करुणा कर दो राम, दु:ख हरलो सुख भर दो राम ।।३।।
जब जाव शरण में आ जाता, तब निर्भय पद को पा जाता।
भव बन्धन से तब छुट जाता, जय नन्द नन्दन जय घनश्याम।
साधक के तुम जीवन राम, हें दु:ख भजन तुम्हें प्रणाम ।।४।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन का सार

इस जीवन का सार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन।
इस दुनियाँ में पुरुषार्थ यही है बन जायें इन्सान किसी दिन।
जप, तप, व्रत, अरु, संयम से, सन्त संग अरु सेवा से।
सब साधन का सार यही है, मिट जाये अज्ञान किसी दिन।
सुख सम्पत्ति जो मिली जगत से, एक दिन सब छूट जायेगी।
सब मिलने का सार यही है, हो जावे यह दान किसी दिन।
इस शरीर से सेवा कर ले रामनाम को हिय में धर ले।
उड़ जाये जब स्वांस का पछी बन जाये शमशान किसी दिन।
जिनको तुम अपना समझे हो, वह काम न तेरे आयेंगे।
साधक सत्संग बैठि करि, मिल जाये गुरु ज्ञान किसी दिन।

कीर्तन

भोले भाले शम्भू तुमको लाखों प्रनाम।
भागीरथ ने विनय सुनाई, तब गंगा थी सिर में छाई।
सिर से थी भूतल पर आई, तर गये जग पापी महान।
पार्वती ने जब विनय सुनाई, राम कथा तब तुमने गाई।
भक्तजनों को हुई सुखदाई, गाते हैं सब सन्त सुजान।
असुरदेव में हुई लड़ाई, तब तुमने थी करी सहाई।
पावन यश तिहुं लोक में छाई, सब करते हैं गुणगान।
दुखियों के तम दानबन्धु हो, सन्त जनों के सुखदाई।
साधक के अब हरउ दुसह दुःख, दीनबन्धु भगवान।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सावधान हो ?

तेरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया काहे सोवे।
भजले अब नन्दकिशोर, उमरिया काहे खोवे।
काम नें लूटा क्रोध ने लूटा, लूट चले मद लोभ।
अब होई गयो भोर, नहिं लीन्ह खबरिया काहे रोवे।
चार गजो चरगजा मंगाकर, चढ़े काठ की घोड़ी।
जिस तन से सब प्यार करते थे, फूँक दीन्ह जस होरी।
हाड़ जरे लकड़ी जैसे, केस जरे ज्यों घासा।
राम कृपा से वो बचि गये, जो नित सन्तन के पासा।
राम-नाम का करो सहारा, छोड़ि जगत की आशा।
साधक सब सुख मिले जगत में, अन्त अमरपुर बासा।

कीर्तन

नारायण भज नारायण भजु, भजु नारायण भाई।
सबरी, गज, गीध, अहिल्या नाम जपे गति पाई।।
जाकी प्रीति जहाँ जैसो, तिन तैसो गति मति पाई।
कलयुग का यह अल्पवृक्ष है, राम नाम सुखदाई।।
सुर दुर्लभ सुख मिले जगत में, यम फाँसी छुट जाई।
सोहँ सुमिरत नाम सुधा रस, मुनि दुर्लभ गति पाई।।
मातु पिता, भगनी, सुत, नारी, तन, धन, अरु भाई।
अन्त समय काउ काम न आवे, हँस अकेला जाई।।
साधक अब सब आश छोड़कर, भजले श्री रघुराई।
जनम-जनम की बिगड़ी बनिहै, अन्त अमरपुर जाई।।

---:o:---

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पद

जग में, हरि बिन कोई काम न आयो ।
यह दुनियाँ फूल सेमर को देखत मन ललचायो ।।
लोभी बनकर रहे जगत में लाख करोड़ कमायो ।
झूठ कपट छल कियो रैन दिन मन सन्तोष न पायो ।।
कामी बनकर सुख के पीछे स्वान-सरिस ह्वै धायो ।
यह वही काम है जिसने जनम-जनम भटकायो ।।
अभिमानी बन अधिकार पाय करि फूलो नहीं समायो ।
सेवा त्याग स्वार्थ के बस में दुखियन बहुत सतायो ।।
मोही बनकर फँसे जगत में सुत दारा में उरझायो ।
अन्त समय कोई साथ न दीन्हों हँस अकेला धायो ।।
कहँ लगि कहौं दोष आपने बरतन मन सकुचायो ।
साधक का उद्धार करो अब शरण तुम्हारी आयो ।।

पद

तुम सम को उदार जग माहीं ।
तीन लोक महँ खोज फिरौं मैं तुम समान कोउ नाहीं ।
सूर दुर्लभ तन दियो कृपा करि, ऐसी करुणा उरधारी ।।
तुमने हम को कभी न छोड़ा, हमने ही याद बिसारी ।।
जब जब भीर परी भक्तन पर, तब तब करी सहाई ।।
शबरी के बेर सुदामा के तन्दुल साग विदुर घर खाई ।।
दीनों के तुम दीन-बन्धु हो सन्तन के सुखदाई ।
साधक है अब शरण तुम्हारी कृपासिन्धु रघुराई ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देख लो

इस जग में कितना ही तुम स्वच्छन्द विचर कर देख लो ।।
तृप्ति न होगी फिर भी कौतुक इधर-उधर के देख लो ।।

जिस सुख को प्राणी अपनाता, वही ईश से विमुख बनाता ।
सुख ही है सर्वत्र नचाता, सुखासक्त प्राणी दुख पाता ।
नहीं समझ में आये तो तुम भी जी भर के देख लो ।।

सीखो जग में सेवा करना, सीखो दुखियों के दुःख हरना ।
सीखो भव से पार उतरना, सत् पथ में अब कहीं न डरना ।
जो आया है, जायेगा वह धीरज धर के देख लो ।।

जग में जो कुछ बोया जाता, कई गुना बढ़ कर वह आता ।
जो सुख देता वह सुख पाता, मानव अपना भाग्य विधाता ।
यदि तुमको विश्वास न हो तो कुछ भी करके देख लो ।।

जिसको तुमने अपना माना, यहाँ किसी का नहीं ठिकाना ।
निश्चित है जिसका छुट जाना, व्यर्थ न उससे मोह बढ़ाना ।
तन में रहते हुए पथिक तुम, मन से मर के देख लो ।।

———

सन्त वचन--

मृत्यु के मूल्य पर अमृत मिलता है। सत्य को पाने के लिये 'मैं' को मिटाना होता है। दर्शन ही वाह्य जगत में लाया है दर्शन ही अन्तर सत्ता में ले जायगा। मन से इन्द्रियों के सहारे जो कुछ पकड़ा जाता है उसको और उसके परिणाम को विवेक में देखा जाता है। चित्त शान्त हो, शून्य हो, निर्विकार हो तब दर्शन होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सावधान

ओ आने वालो इतना समझ लो, इस जग से तुमको जाना ही होगा।
यदि रह गई हैं कुछ वासनायें, उनके लिये फिर आना ही होगा।
जब तक किसी पर अधिकार रखकर, जितना अधिक तुम सुख भोगते हो।
मानो न मानो जीवन में अपने, पुण्यों की पूँजी गवाँना ही होगा।
दानाधिकारी बन कर किसीं से, श्रद्धा के बाहर यदि धन लिया है।
तुम ले के देना भूलो भले ही जो ऋण लिया वह चुकाना ही होगा।
जिससे किसी को दुख हो रहा हो, ऐसा असत् कर्म होने न पाये।
सुख के लिये जो दुख दे किसी को, उसको कभी दुख उठाना ही होगा।
तुम दूसरों को वह देते रहना, जो दूसरों से स्वयं चाहते हो।
जैसा भी दोगे वैसा प्रकृति से, कई गुणा तुमको पाना ही होगा।
कुछ जानना है अपने को जानो, मानना है तो प्रभु को ही मानो।
करना है तो सबकी सेवा करो तुम, जीवन किसी विधि विताना ही होगा।
छोड़ो अहंता ममता जगत की, परमात्मा से ही प्रीति जोड़ो।
देखो पथिक तुम जिनकी शरण हो, उन पर ही विश्वास लाना ही होगा।

सन्त वचन--

जो अपने को जान लेता है वह मुक्त होता है। जो परमाश्रय प्रभू को अपना मान लेता है वह भक्त होता है। जो स्वार्थ छोड़ कर सेवा करता रहता है वही शान्त स्वस्थ हाता है।

दृश्य से द्रष्टा की ओर चलो, जड़ता से उठकर नित्य चिद्घन में आ जाओ। सत्य की विस्मृति में ही संसार का प्रभाव है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शुभ अवसर

शुभ अवसर है तो यह है. जो चाहो लाभ उठाओ ।।
यह व्यर्थ न जाने पाये, निज को निर्दोष बनाओ ।।
सत्संगति से गति मिलती, हियकर पुनीत मति मिलती ।
सद्गुरु विवेक मिल जाता, उसको न कहीं ठुकराओ ।।
दुःख से न डरो जीवन में, प्रभु का आश्रय धर मन में ।
जो कर न सके थे अब तक, वह भी करके दिखलाओ ।।
जग के इन संयोगों में, तुम रमो न प्रिय भोगों में ।
तजकर वियोग का भय अब, नित योग गीत तुम गाओ ।।
अपने स्वरूप को जानो, तन धन अपना मत मानो ।
मोही बन कर आये थे, प्रेमी बन कर ही जाओ ।।
इच्छाओं के त्यागी बन, प्रभु के ही अनुरागी बन ।

सन्त वचन :—

पारमार्थिक उन्नति के सात नियमों का पालन करो (१) अपने गृह सम्बन्धी कार्यों में आनन्द न मानो (२) व्यर्थ वार्ता में सुख न लो (३) निद्रा में अधिक समय न काटो (४) प्रपञ्ची जनों के साथ समय न बिताओ (५) दुर्वासना के वश होकर न रहो (६) दुष्टों की संगति से बचते रहो (७) साधना समाधि में अल्प सफलता पाकर सन्तुष्ट न हो जाओ ।

परम लाभ के लिये (१) सदाचार का ही पालन करो (२) सत्पुरुषों का संग करो (३) किसी की निन्दा न करो (४) अपनी निन्दा सुनकर क्षोभ न करो (५) अपनी प्रसंशा सुनकर हर्षित न होओ (६) अमानी रह कर मान दो (७) स्मृति और प्रज्ञा को जाग्रत बनाये रहो (८) भोग सुख में, धन में; अधिकार सन्मान में सन्तोष करो किन्तु प्रभु के ध्यान में, ज्ञान में, सद्गुण विकास में, दान में, स्वाध्याय में, तप त्याग में कहीं सन्तोष न करो ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किसने क्या पाया ?

देखो किसने क्या पाया, मानव क्यों जग में आया ।।

आने वालों को देखो क्या लेकर वे आते हैं ।
जाने वालों को देखो, क्या सँग ले कर जाते हैं ।
कुछ पुण्य किये या यूँ ही, यह नर तन व्यर्थ गवाँया ।। देखो० ।

उस लोभी को भी देखो सञ्चय का जिसे व्यसन है ।
कितनी ही सम्पति जोड़ी पर तृप्त न होता मन है ।
कौड़ी न साथ जायेगी, फिर किसके लिये कमाया ।। देखो० ।।

उस कामी को भी देखो मन भरा या कि रीता है ।
इच्छायें पूरी करते कितना जीवन बीता है ।
यह वही काम है जिसने, किसको किसको न नचाया ।। देखो० ।।

उस मोही को भी देखो सबकी ममता में फूला ।
निज देह गेह में फँस कर उस परमेश्वर को भूला ।
यह मोह दुखों की जड़ है, इसने किसको न रुलाया ।। देखो० ।।

उस अभिमानी को देखो यह विभय रहेगा कब तक ।
उस से भी बढ़ कर जग में हो गए करोड़ों अब तक ।
मिट्टी में मिल गई उनकी जो दर्शनीय थी काया ।। देखो० ।।

उस दानी को भी देखो, जितना बोता जाता है ।
वह कई गुना बढ़ कर ही, उसके सन्मुख आता है ।
जिसने जितना दे डाला, उतना ही लाभ उठाया ।। देखो० ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उस त्यागी को भी देखो, जो दुखद दोष को तजकर।
निर्द्वन्द्व शान्ति पाता है, सत् परमेश्वर को भजकर।
भोगी ने राग बढ़ाया, त्यागी ने प्रेम अपनाया ।। देखो० ।।

उस ज्ञान युक्त को देखो, जिसको न कहीं कुछ भय हैं।
दिख रहा ज्ञान में उसको, यह विश्व आत्मा मय है।
जो कोई सन्मुख आया, उसका अज्ञान मिटाया ।। देखो० ।।

उस प्रेम-युक्त को देखो जिसका मन प्रभुमय हो कर।
निजमय ही प्रभु को पाता सब आशा चिन्ता खोकर
यह पथिक धन्य है जिसकी प्रज्ञा में प्रेम समाया ।। देखो० ।।

—:०:—

सन्त वचन :—

हम लघु में, क्षुद्र में अटक कर महान से विराट से वञ्चित हैं। हमें छोड़ना खोना कुछ नहीं है, केवल आँखें खोल कर देखना है। चिन्मात्र सत्ता से अपने मैं को पृथक देखना अज्ञान है। जो वाह्य रूप में अटक जाता है वह अरुप तक नहीं पहुंच पाता है जिसके द्वारा आंख से देखा जाता है वह आँख के पीछे ही है उसे जानने के लिये ज्ञान प्रकाश में अन्तर दृष्टि खोलने की साधना करो। क्षुद्र को देखने वाला क्षुद्र से, विराट को देखने वाला विराट से भर जाता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

।। साथी आना है तो आले ।।

देख जगत का ले न सहारा, खुद भूला है जगत विचारा।
वह क्या देगा, तू क्या लेगा, उससे नजर हटा ले ।। साथी० ।।

कोई अपने सुख में फूला, कोई अपने दुःख में भूला।
सुख भी झूँठा, दुख भी झूँठा, अपना मन समझा ले ।।साथी०।।

लम्बी मंजिल हिम्मत भर ले, अपने को अपने वश करले।
राह कठिन है, थोड़ा दिन है, जल्दी कदम बढ़ा लें ।।साथी०।।

जीवन के स्वर-ताल मिला ले, इसमें प्रेम-गीत कुछ गाले।
पथिक प्रगति से, निश्चल मति से निज प्रियतम को पा ले ।।साथी०।।

—o—

सन्त वचन :-

जीवन की मृत्यु नही मृत का कोई जीवत नहीं। अनित्य अर्थात् सदा न रहने वाला शरीर नित्य जीवन की अनुमति का साधन है। हम कुछ बनना या होना चाहते हैं परन्तु जो हैं वह देखना नहीं चाहते। जीवन नित्य वर्तमान में ही है। जिसे अपना कुछ नहीं दीखता वही मोह ममता रहित हो सकता है।

असत् अनित्य के सम्बन्ध से ही सारे विकार हैं समस्त दुःख हैं दोष हैं। संसार से निराश होने पर ही साधना पूर्ण होती है। जो सदा रहेगा उसी आत्मा परमात्मा से प्रेम करो। जो सदा न रहेगा उसी की ममता का त्याग करो।

Advocidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

॥ फिर मत कहना कुछ कर न सके ॥

जब नर तन तुम्हं निरोग मिला सत्संगति का भी योग मिला।
फिर भी प्रभुकृपानुभव करके, यदि भवसागर तुम तर न सके ॥
तुम सत्य तत्त्वज्ञानी होकर, तुम सद्धर्मी दानी होकर।
यदि सरल निरभिमानी होकर, कामना-विमुक्त विचर न सके।
जग में जो कुछ भी पाओगे, सब यहीं छोड़के जाओगे।
पछताओगे तुम यदि अपना, पुण्यों से जीवन भर न सके ॥
जो सुख सम्पत्ति में फूल रहे, जो वैभव-मद में भूल रहे।
उनसे फिर पाप डरेंगे क्यों जो प्रभु विधान से डर न सके ॥
जब अन्त समय आ जायेगा, तब क्या तुमसे बन पायेगा।
यदि समय शक्ति के रहते ही आचार विचार सुधर न सके ॥
होता तब तक न सफल जीवन, है भार रूप सब तन मन धन।
यदि पथिक प्रेमपथ में चलकर, अपना या पर दुख हर न सके ॥

**

सन्त वचन—

सञ्चित शक्ति के द्वारा ही संकल्प दृढ़ होता है. संकल्प की पूर्ति के लिये श्रम और साधना परमावश्यक है। जो खोया नहीं जा सकता वही स्वरूप है। प्रेम और प्रज्ञा को समाधि साधकर जाग्रत करो।

वर्तमान में कर्तव्य पालन क लिये सावधान रहो। सत्य की विस्मृति ही संसार बन गई है। न जानने पर जो जगत दीखता है, जान लेने पर वही ब्रह्ममय दीखता है। सत्य परमात्मा की अनुभूति समता में होती है। राग द्वेष की विषमता दूर होने पर समता प्राप्त होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाग्रति-सन्देश

शुभ अवसर बीते जाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ।।
अविवेकी देर लगाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ।।

यह महादुःखद अज्ञान निशा. जिसमे सूझती न सत्य दिशा ।
इसको सब समझ न पाते हैं. तुम बुद्धिमान मानव जागो ।।

यह झूँठे दुख-सुख के सपने, जिनको तुम समझ रहे अपने ।
सब मन के माने नाते हैं, तुम बुद्धिमान मानव जागो ।।

भोगों से जो कि विरक्त बने, जो सच्चे प्रभु के भक्त बने ।
वे गुरु जन नित्य जगाते हैं, तुम बुद्धिमान मानव जागो ।।

जो उठते मोंह नींद तजकर, चलते शुभ सद्गुण से सजकर ।
वे पथिक सुपथ में गाते हैं, तुम बुद्धिमान मानव जागों ।।

सन्त वचन :--

ज्ञात में जागने पर अज्ञान ही छूटता है. आसक्ति ममता अहंता ही छूटती है. इनके छूटते ही सब कुछ पा लिया जाता है ।

जो स्वयं को नहीं जानते. अपने प्रभु को नही जानते जो कर्तव्य से विमुख हैं वही भूल में है। प्रभु स्मरण से स्व को भुलाना भूल है। स्व विस्मरण, दुःख विस्मरण का उपाय है। स्व स्मरण, दुःख विनाश का उपाय है। भूल का परिणाम दुःख है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

एक ईश्वर के गुणगान गाते चलो।
अपने मन को उन्हीं में लगाते चलो ।।
जो समय है उसे व्यर्थ खोना नहीं,
मोह-निद्रा में जग बीच सोना नहीं।
भाग्यवश कष्ट आयें तो रोना नहीं,
भूल से अब सुखासक्त होना नहीं।
अपने कर्तव्य सारे निभाते चलो ।।
कभी कुविचार अन्तर में लाओ नहीं,
भूलकर भी कुसंगति में जाओ नहीं।
किसी की वस्तु में मन लुभाओ नहीं,
किसी के चित्त को तुम दुखाओ नहीं।
मान-माया के बन्धन छुड़ाते चलो ।।
पुण्य के लिये तुम पूर्ण दानी बनो,
गुरु-कृपा के लिये निरभिमानी बनो।
भक्ति चाहो तो प्रभु के ही ध्यानी बनो
मुक्ति के लिये तुम आत्म ज्ञानी बनो।
त्याग अनुराग उर में बढ़ाते चलो ।।
व्यर्थ चिन्तन से निज चितको मोड़कर,
लोभ को भी सदा के लिए छोड़कर।
कामना की कठिन बेड़ियाँ तोड़कर,
परम प्रभु से अहङ्कार को जोड़कर।
पथिक अपने को प्रभुमय बनाते चलो ।।

सन्त वचन :—

मुक्त होना चाहते हो तो देह के स्वामी को जान लो और मुक्त होना चाहते हो तो संसार के स्वामी को जान लो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अब से चेतो

अब तक तुम जाने क्या होते देखो कितने दिन बीत गये ।।
खेलते और खाते साते देखो कितने दिन बीत गये ।।

यह दुर्लभ मानव तन पाकर प्रभु के प्रेमी न हुए आकर ।
तब तो फिर व्यर्थ समय खोते देखो कितने दिन बीत गए ।।

कितनी असार चिंताओं का नित राग द्वेषमय भावों का ।
अति दुखद भार ढोते ढोते देखो कितने दिन बीत गए ।।

जितने भी दिखते हैं बँधन, रचता इनको अपना ही मन ।
काटते वही जो कुछ बोते, देखो कितने दिन बीत गए ।।

धन मान भाग में काया में, अब मुग्ध न होना माया में ।
ऐ पथिक यहाँ हँसते रोते, देखो कितने दिन बीत गए ।।

प्रभु जी जग में साथी कौन हमारा ।
तुमने हमें कभी न छोड़ा हमनें ही तुम्हें बिसारा ।।

तन धन धाम मिले जगत में, जिनका लिया सहारा ।
अन्त समय सब यहीं रहेगा, मातु पिता सुत दारा ।।

आत्मज्ञान बिना नर डोलें, कोउ मथुरा कोउ काशी ।
आये की कछु सुधि नहिं कीन्हीं, पड़ी गले में फांसी ।।

पांच तत्व का बना पींजरा, जामे रहे अविनासी ।
अपने घर का मरम न जाने, बाहर ढूढ़न जासी ।।

नाभि बीच मृग कस्तूरी, बन कर फिरै उदासी ।
साधक गुरु चरनों में लागों, सहज मिले अविनासी ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शरणागति

मन भज लो तुग नाम यही श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम् ।
मानव जीवन का है सार यही श्रीहरि शरणम् श्री हरिशरणम् ॥
जब ग्राह ने गज को पकड़ लिया,
तब किसी ने नहिं था साथ दिया,
तब गज ने करी पुकार यही श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम् ॥
जब चीर दुशासन ने खींचा,
तब आँखों को सबने मींचा,
तब द्रोपदि ने करी पुकार यही श्री हरिशरणम् श्रीहरि शरणम् ॥
जब रावण ने अत्याचार किया,
सुर, नर, मुनियों को दुःख दिया,
तब देवों ने टेर लगाई यही श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम् ॥
जब रावण ने लात उठाई थी,
वह लात विभीषण खाई थी,
तब भक्त ने करी पुकार यही श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम् ॥
जग में जो कुछ भी पाओगे,
सब छोड़ यहीं पर जाओगे,
सद्गुरु का है ज्ञान यही श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम् ॥
अब अपना कुछ भी मत मानो,
परम तत्व को तुम पहिचानो,
साधक का है आधार यही श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम् ॥

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भगवान शंकर की स्तुति

भगवान तुम्हारी जय होवे, भोलेनाथ तुम्हारी जय होवे।
तुम सकल विश्व के स्वामी हो,
घट घट के अन्तरयामी हो।
जब कृपा दास पर करते हो। तब यह जीव अभय होवे ॥१॥
तुम दिव्य ज्ञान जब देते हो,
अज्ञान तिमिर हर लेते हो।
जीवन सुखमय कर देते हो। तब आनन्द लाभ अतिशय होवे ॥२॥
तुम्ही एक आश्रय दाता हो,
तुम ही बन्धु पिता माता हो।
दुखियों के तुम सुखदाता हो। तुमसे ही सौभाग्य उदय होवे ॥३॥
जब दया जीव पर करते हो,
तब दोष न हिय में धरते हो।
सब पाप तभी तुम हरते हो। तब जीवन यह निर्मल होवे ॥४॥
इस जग के तुम निर्माता हो,
जीवन के भाग्य विधाता हो।
साधक के तुम सिधि दाता हो। तुम में यह जीवन लय होवे ॥५॥

———

सन्त वचन--

भगवद् भजन के लिये, मन की पवित्रता चित्त की स्थिरता एवं विवेक परमावश्यक है। भोगा शक्ति भजन में बाधक है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रेम तत्व

उधो मैं तो श्याम के हाथ बिकानी ।
श्याम बिना दूजो नहिं जग में ऐसा कहते ज्ञानी ।।
सभी खिलौने खाँड़ के बनते, खाँड़ि खिलौना नाही ।
तैसे श्याम रहे जगत में, श्याम जगत हैं नाही ।।
पानी का बनें बुलबुला, पानी में मिल जाये ।
मैं तो मिल गई श्याम रंग में दूजू कहाँ समाये ।।
वह तो मनुआ श्याम अनो है श्याम की भस्म रमाये ।
कौन करे यह योग साधना कौन समाधि लगाये ।।
अपनी दशा कैसे मैं वरनू ज्यों गूंगा गुड़ खाये ।
साधक अब तो श्याम बिना दूजो नहिं दरसाये ।।

———

मो सम कौन पतित जगमाही ।
शुभ कम कबहु नहि कीन्हों पाप करत निसिवासर जाहीं
अजामिल से पापी तर गये अरु गणिका सी नारी ।
मैं अधमी अबहू न तारो सहि-सहि संकट भारी ।
प्रभु करुणा कर नर तन दीन्हों ऐसी कृपा कीन्हीं ।
सद्गुरु कृपा हुईं ऐसी जिन्ह सत्संगति दीन्हीं ।
भरि-भरि उदर विषयन को धायो ऐसो भयो अनारी ।
आये की कछु सुधि नहिं कीन्हीं ऐसी याद विसारी ।
वृद्ध भये सिर हालन लागे सारो शक्ति गंवाई ।
अन्त समय कोउ काम न आयो तब याद प्रभू की आई ।
नाम लेत प्रभु हरे पाप सब ऐसी करुणाधारी ।
साधक तो अब भयो तिहारो जय जय कृष्ण मुरारी ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कीर्तन

गोविन्द हरे गोपाल हरे जय जय जय प्रभु दीनदयाल हरे।
एक अगोचर, अलख निरञ्जन, सत लोचन आनन्द रासी ॥
जै परमेश्वर जै अखिलेश्वर जै व्यापक ब्रह्म अविनासी ॥
तुम निराकार तुम निर्विकार सर्वाधार सबके उर बासी ॥
माया गुणातीतं चरित पुनीतं श्रीपति पुर बैकुण्ठ निवासी।
गोविन्द हरे गोपाल हरे जय जय प्रभु दीन दयाल हरे ॥ १ ॥

तुम अखिल विश्व के स्वामी, तुम सब के अन्तर्यामी ॥
दीनों के तुम दीनबन्धु हो, हे विश्वनाथ सुख धामी ॥
तुम्हीं शांति के देने वाले, दीन जनों के अनुगामी ॥
तुम बिनु कौन हरें दुसह दुख मेरे श्रीपति स्वामी ॥
श्री राम हरे घनश्याम हरे, मधुसूदन दीनदयाल हरे ॥

तुम शरणागत के पालक हो तुम दीनबन्धु दुखहारी ॥
तुम अधमों के उद्धारक हो, तुम कृपा सिन्धु वनवारी ॥
तुम करुणावत्सल दयानिधान, भक्त जनों के सुखकारी।
तुम्ही द्वैत अद्वैत बने, अरु राजा रंक भिखारी ॥
जय राम हरे जय कृष्ण हरे नारायण भज गोविंद हरे ॥ २ ॥

शरणागत के पालक तुम हो, अधमों के उद्धारक तुम हो ।
अज्ञान तिमिर के नाशक तुम हो, दिव्य ज्ञान प्रकाशक तुम हो ॥
दुर्गति के सद्गति दाता हो, तुम ही बन्धु पिता माता हो।
तुम दिव्य प्रकृति निर्माता हो, साधक के जीवन दाता हो ॥
जय जय प्रभु दीन दयाल हरे—गोविन्द हरे गोपाल हरे ॥४॥

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कीर्तन

श्री कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो तुम।
अपने मन को उन्ही में लगाते चलो तुम ॥
काम करते रहो, अरुनाम जपते रहो तुम।
दीन दुखियों के दुःख को हटाते रहो तुम ॥
भूल से भी न हो जाय पाप डरते रहो तुम।
सुखसे दुखियों की झोली को भरते रहो तुम।
अपने पुण्यों की पुंजी बढ़ाते चलो तुम ॥१॥ श्री कृष्ण०

कभी कुविचार मन में तुम लाओ नहीं।
भूल कर के कुसंगति में जाओ नहीं।
जो आये उसे तुम भगाओ नहीं।
जो चला जाये उसे तुम बुलाओ नहीं।
चाहों को अब तो मिटाते चलो तुम ॥२॥ श्री कृष्ण ॥

धन पाया है तो तुम दानी बनो।
अधिकार में तुम निरभिमानी बनो ॥
गुरुसंग से तुम तत्व ज्ञानी बनो।
परम प्रभु के ही अब तुम ध्यानी बनो ॥
भक्ति मुक्ति का मारग बनाते चलो तुम ॥३॥ श्री कृष्ण

क्रोध को तो कभी तुम आने न दो।
लोभ को भी सदा के लिये छोड़ दो ॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कामना की कठिन बेड़ियां तोड़दो।
जग से सदा के लिये मुख मोड़ दो॥
ऐसा वैराग्य मन में बढ़ाते चलो तुम ॥४॥
दुःखआये तो रोकर, आँसू बहाना नहीं।
भाग्य पर रह करके, पीछे पछताना नहीं॥
कभी दुखियों को अब तुम सताना नहीं।
ज्ञानसद्गुरु का अब तुम भुलाना नहीं॥
'साधक, प्रभु को ही अपना बनाते चलो तुम ॥५॥

दीन की पुकार

मन भजले राधाकृष्ण मुरारी,
असुर विनाशक सब दुख नाशक, दीनबन्धु दुखहारी-
भव भय भजन जन मन रंजन, सन्तन के सुखकारी॥
तुम एक अगोचर अलख निरंजन भक्तों के सुखकारी।
पालन सुर धरनी अद्‌भुत करनी गो द्विज के हितकारी।
जेहिं दीन पियारे करुणा उर धारे जय २ कृष्ण मुरारी
सारद श्रुति शेषा जानि महेशा अस्तुति करैं तुम्हारी।
जय जय अविनासी सब घट वासी कृपा सिंधु गिरधारी
मैं भयो अपावन प्रभु जग पावन साधक शरण तुम्हारी
अबकी बार मोहिं पार करो नहिं डूबे नाव हमारी॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाग्रति जीवन

उठो मानव हुआ सवेरा, क्यों पड़ा अब सो रहा है।
मोह निद्रा में पड़ा, जीवन की पूंजी खो रहा है।।
जो कर्म तून्हें किया, उसका फल तेरे है सामनें।
भूल से फिर बीज अनुचित कर्म के क्यों बो रहा है।।
जिनको तुम अपना हो कहते, वह तुम्हारे है नहीं।
बन के मालिक व्यर्थ ही, बोझ क्यों तू ढो रहा है।।

भूत का ना कर मनन, भविष्य की चिन्ता छोड़ दे।
वर्तमान में दृष्टा बन, 'तू देख'' जो कुछ हो रहा है।।

देह की करके गुलामी, भोगों में जा कर फंसा।
ज्ञान गंगा में नहा कर देख जो कुछ हो रहा है।।

अब भी कुछ बिगड़ा नहीं भज ले श्री भगवान को।
'साधक' तो अपने पाप को, प्रेम जल से धो रहा है।

**

यह अवसर नहिं बारम्बार मिले।
राम नाम का ध्यान तू धरले, तुझको वह करतार मिले।।
जग में भये रावण से अभिमानी, सोने की लंका मन्दोदरि रानी।
मिट्टी में खोजे उनको अब कोई, एकहु नहिं सरताज मिले।।
सहसबाहु सम को बलधारी, एक-एक भुजा काट सब डारी।।
कालबली ने जिसे न खाया, ऐसा नहिं कोई सरदार मिले।
कर्ण से जैसे दानी आये, दुर्योधन से मानी आये।।
हम-हम करि सब मरे जगत में, नहिं मुक्ती का द्वार मिले।
सद्गुरु का ज्ञान यही है परम तत्व का ध्यान यही है।
'साधक' सुमिरौ नाम सुधारस, तब भक्ती का उपहार मिले।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दुखी की पुकार

मेरी राखो लाज गिरधारी, मैं दुखिया शरण तुम्हारी।
जैसे राखी द्रुपद सुता की, चीर बढ़ायो दियो भारी॥
दस हजार गज बल थाक्यो गयो दुसासन हारी॥

गज की टेर सुनी यदुनन्दन गरुड़ छोड़कर धाये।
ग्रह को मारि दुख हरि लीन्हों, जै जै कृष्ण मुरारी॥
खम्भ चीर प्रह्लाद उबार्यो, करी न जरा अवारी।
कीर पढ़ावत्त गणिका तारी, तारी गौतम नारी॥

शबरी के बेर सुदामा के तन्दुल, साग विदुर घर खाये।
ऐसी कृपा करी दीनन पर कृपा सिन्धु गिरधारी॥

मोसों पतित न भयो जगत्त में, सब पतितन में हूं भारी।
अबकी बार मोहिं पार करो, अब साधक शरण तुम्हारी॥

** **

पद

मैं प्रभु पतित्त पावन सुनें।
सन्त संग कबहूं नहि कीन्हों फिर-फिर विषयन सिर धुने॥
अजामिल गीध व्याध इनमें कहो कौन साधू।
पक्षी हूं पद पढ़ात तारी गणिका सी नारी॥
आभीर यमन कोल्ल किरात, तर्यो विभीषण भाई।
गौतम नारी तरी श्राप बस तर गयी शबरी माई॥
लाखों पापी तरे जगत में, नाम में सुरति लगाई।
अबकी बारी साधक की है, दीनबन्धु रघुराई॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

सदा सत्य की खोज करते रहो तुम ।
समय व्यर्थ में अब न खोते रहो तुम ।।

अगर चाहते हो सुखी हो कर के जीना ।
जो मिला है उसे दुखियों को देते रहो तुम ।।

अगर चाहते हो शान्ति से जीना ।
चाहों का त्याग को करते रहो तुम ।।

जो मिला है वह तुम्हारा नहीं है ।
यह मुक्ती का आनन्द लेते रहो तुम ।।

बनो धीर अब कष्टों के सन्मुख ।
अज्ञानियों की तरह न रोते रहो तुम ।।

मिला है तुम्हें वही जो पहले दिया था ।
भूलकर न दुःख बीज बोते रहो तुम ।।

निरभिमानी बनो अधिकार पाकर ।
हृदय को दया से भिगोते रहो तुम ।।

ऐसे निष्काम प्रेमी बनो तुम साधक ।
प्रेम से प्रभू नाम लेते रहो तुम ।।

संत वचन--

सत्य के लिये, धर्म के लिये, पुण्य दान के लिये त्याग एवं प्रेम के लिये, अवसर पर सावधान रहो । आलसी प्रमादी सुखासक्त तथा अहंकार से विमूढ़ बुद्धि वाले अवसर का सदुपयोग नहीं कर पाते । शक्ति के रहते ही ज्ञान ध्यान त्याग प्रेम को पूर्ण करो ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विनय

अब सुन लो विनय हमारी, हम आये शरण तुम्हारी।
तुम हेतु रहित उपकारी दुःखियों के दुःख हारी॥
हे नाथ अब तो यही विनय है, सदा तुम्हारा ध्यान रहे।
इस जग में रह करके, और न कुछ भी मान रहे॥
कितना भी धन मिले जगत में, उसका नहिं अभिमान रहे।
किसी योनि, जग में जनमूं, तेरा ही गुण गान रहे॥
तुम दुखियों के दुःख हारी, हम आये शरण तुम्हारी ॥१॥

हे दया निधान हे कृपा निधान, किसी का न अपकार करुँ।
दीनों दुःखियों को हे भगवान मैं अधिक अधिक प्यार करुँ।
धन वस्तु जो मिली जगत से, निशि दिन उसका दान करुँ
कभी न किसी से कुछ भी चाहूं, निशि दिन तेरा गुण गान करुँ॥
जै जै श्री आनन्द विहारी, हम आये शरण तुम्हारी ॥२॥

तजि कुसंग सत्त संग बैठि, सत पथ को पाजाये।
सदा नाम को धरुँ हृदय में, जीवन पावन बन जाये॥
मम अन्तर में सदा विराजो, ऐसा मेरे मन को भाये।
ऐसा आनन्द रहे प्रभो अब, भक्तिका रस छा जाये।
साधक को अब प्रभु अपनाओ, हम आये शरण तुम्हारी ॥३॥

—:०:—

सन्त वचन :-

संसार की सहायता से दुःख नहीं मिटता। दुःख तो सुख का अन्त है। अज्ञानी को ही दुःख होता है। संसार के समस्त दुःख दोषों का त्याग करके दुःख हारी भगवान से मिलाना चाहते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रार्थना

बिगड़ी मेरी बना दो हे दीनबन्धु भगवान।
तेरी शरण में आया हे दीनबन्धु भगवन॥ १॥

चरणों ने तुम्हारे गीध गणिका को उबारा है।
नाम ने तुम्हारे अनेक अधमों को तारा है॥
डूबते गजराज को तुमने दिया सहारा है।
मैंने ही क्या बिगाड़ा जो अब तक न तारा है॥
कृपा की अदालत में यह दावा है भगवन॥ २॥

बेर को खा करके शबरी को तार दीन्हा।
तन्दुल को खा कर रंक को धनवान कीन्हा॥
माखन को खाकर यसुदा को प्यार दीन्हा।
ऐसे दयालु प्रभु को अब तक न मैंने चीन्हा॥
अब तो दया यह कर दो हे दीनबन्धु भगवन॥ ३॥

अर्जुन का रथ चलाकर दुष्टों का नाश कीन्हा।
वाली को मार कर सुग्रीव को राज दीन्हा॥
तारा शरण में आई तब उसको ज्ञान दीन्हा।
जो भी शरण में आया उसको शरण में लीन्हा॥
मैं हूं शरण तिहारी हे दीनबन्धु भगवन॥ ४॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दया की तुम्हारी कहाँ कदर होती ।
दुखियों की टोली यदि जगत में न होती ।।
कृपा जो तुम्हारी यदि अधमों में न होती ।
दीनों और दीनबन्धु की फिर सगाई न होती ।।
अब हम हैं बने तुम्हारे हे दीनबन्धु भगवन ।। ५ ।।

माना यह मैंने अब तक तुमको नहीं पुकारा ।
जप ध्यान तप को अब तक मैंने नहीं है धारा ।।
विषयों के सुख में फँस कर जीवन सभी गुजारा ।
अब तो सब त्याग कर तेरा लिया सहारा ।।
साधक को शरण में ले लो हे दीनबन्धु भगवन ।। ६ ।।

**

हे मेरे भगवान दीनानाथ ऐसी कृपा अब कीजिये ।
हूँ अधम पापी महा अब तो शरण में लीजिये ।।
हे समर्थ हे पतित पावन अहैतुकी कृपा करने वाले ।
सुखी समय में सेवा का दुख में त्याग का यत्न दीजिये ।।
सुख दुख के बन्धन से मुक्त हों, प्रेम का आस्वादन करूँ ।
दे के सुधामय भक्ति को जीवन सफल अब कीजिये ।।
जग का सहारा छोड़ के आया शरण अब आप की ।
साधक बने आपका ऐसी सुमति अब दीजिये ।।

---:0:---

सन्त वचन :--

भगवान की अहैतुकी कृपा और अपने कर्तव्य को कभी न भूलो । सत्य लक्ष्य पर सदा दृष्टि रक्खें ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सत्संग

भगवान की जब होती कृपा तब सत्संग सुलभ होता है।
निष्काम पुण्य जब होते हैं, तब सत्संग में जाना होता है ॥
दुर्लभ मानव जीवन पाया, सन्त संग फिर कबहुँ न भाया।
झूठे सुख में रहा लुभाया, फिर शीश पकड़ क्यों रोता है ॥

जो दोषों को नहिं त्याग सके, विषयों से जो नहिं भाग सके।
जो सुत दारा में आसक्ति रहे, वह भवसागर में खाता गोता है ॥

राजा बन अभिमान बढ़ाया, दुखी जनों को खूब सताया।
झूठी माया को जो सच माने, वह मोह नींद में सोता है ॥
दिन बीता फिर आई रात, रात गई फिर हुआ प्रभात।
देह गेह में फँस करके, व्यर्थ में जीवन खोता है।

सुनी बहुत एकहुँ नहिं मानी, करते रहे सदा मनमानी।
पावन गंगा छोड़ ज्ञान की, विषयों में तन धोता है ॥
पहले किया वही अब पाया, सुख दुख में जीवन उलझाया।
पुण्यों से घट भर ले साधक, दुख के बीज क्यों बोता है ॥

— —-- —

सन्त वचन :—

कृपा सभी बलों से श्रेष्ठ है। अभिमान युक्त मानव कृपा का आश्रय नहीं ले सकता। दुःख अपनी भूल से, आनन्द प्रभु की कृपा से प्राप्त होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कीर्तन

दीनन के दुखहारी राधेश्याम श्यामा श्याम।
भक्तों के हितकारी राधेश्याम श्यामा श्याम।

यही विनय है दीनबन्धु अब सदा तुम्हारा ध्यान रहे।
जब जब जनम धरूँ जग में तेरा ही गुण गान रहे।।
तुम्हीं एक उपकारी राधेश्याम श्यामा श्याम।। १ ।।
जनम जनम से भटक रहे हैं, झूठ सुख में अटक रहे हैं।
आशा तृष्ना में लटक रहे हैं दोषों के कांटे खटक रहे हैं।
अब रखना लाज हमारी, राधेश्याम श्यामा श्याम।।२।।

हम अपराधी तुम दयानिधान, हम क्षुद्र पतित तुम हो महान
हम शक्तिहीन तुम शक्तिमान, अब सुधि लो हे मेरे भगवान
मेरे आनन्द बिहारी, राधेश्याम श्यामा श्याम।।३।।

हिय में तुम्हारावास रहे, जग का भी नहिं कुछ त्रास रहे
गले न यम की फाँस रहे, प्रभु चरणों में ही वास रहे।।
जै जै कृष्ण मुरारी राधेश्याम—श्यामा श्याम।।४।।

कितना ही दुख आ जाये, सब मंगलमय ही दिखलाये
ऐसी कृपा अब हो जाये, सब भव बन्धन कट जाये।।
साधक शरण तुम्हारी—राधेश्याम श्यामा श्याम।।५।।

———

सन्त वचन :-

बीते हुये का मनन न करो, आने की चिन्ता न करो, वर्तमान में किसी संयोग में रस न लो, परम प्रभु के लिये व्याकुल रहो—यही भजन हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

रे मन मूढ़ अब कर खबर, क्यों पूंजी अपनी खो रहा है ।
किसलिये आया था जग में, क्यों बेखबर सो रहा है ।।

घट में है ज्ञान गंगा, जिसमें न लगाया गोता ।
विषयों के गन्दे जल में, इस तन को डुबो रहा है ।।

जो कुछ मिला है तुझको, कुछ दान भी करता रहे ।
लोभ में पड़ करके तू, क्यों आसक्त अब हो रहा है ।।

मोह के बन्धन में पड़कर, व्यर्थ में जीवन बिताया ।
हरि भजन कीन्हा नहीं, क्यों सिर पकड़ अब रो रहा है ।।

राजे महराजे हुये अनेकों, मर गये करोड़ों भोगी ।
साधक तो अपने मन को, अब प्रेम जल से धो रहा है ।।

विनय

प्रभु जी, जो दोष हमारे गिनिहौ ।
पार न पइहौ मम दोषन को, गिनत गिनत थकि जइहौ ।।

कहँ लगि कहौं दोष आपने, सन्त संग नहिं भाये ।
भरि-भरि उदर विषय को धायो जनम अनेक गवांये ।।

सुनि के पाप नरक हूं डर गयो, यमराज देखि घबराये ।
ऐसो पापी ना मिलो अभी तक नरकहुँ नहीं समाये ।।

नरक, स्वर्ग में नहीं ठिकाना, साधक अब कहँ जाये ।
प्रभु को नाम सुना पतितपावन, सन्तन हमहिं बताये ।।

रखौ लाज अब नाम आपने की, जो दीनबन्धु कहलाये ।
साधक अब सब आशा छोड़कर श्रवण सुयश सुनि आये ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वीर मानव

संसार में वह वीर हैं जो मोह को है त्याग पाता।
बन विवेकी हो असंग सम्बन्ध सारे तोड़ पाता॥
बन रहा लोभी वही, जो धन का सँग्रह कर रहा।
जो दान करता है सदा, वह लोभ को है छोड़ पाता॥
जो मन की इच्छा पूरी करे, वह काम का ही दास है।
काम को त्यागे बिना, कोई नहीं है चैन पाता॥
भोगी वही सँसार में, जो इन्द्रियों में आसक्त है।
जिन भोग से होता दुःखी, फिर भी न उनको छोड़ पाता॥
अभिमानी वही संसार में, सुख में सदा फूला रहे।
है दुःखी सँसार में वह, प्रभु को जो है भूल जाता॥
कहते ज्ञानी हैं उसे ही जिसको न कहीं कुछ डर रहे।
सारे जगत में एक, प्रभु को है सदा जो देख पाता॥
प्रेमी बने हैं वही साधक जो सबको अपना हैं मानते।
निष्काम सेवाभाव से, जो प्रियतम से नाता जोड़ पाता॥

———

सन्त वचन :--

तुम अपना कर्तव्य को पूरा करो प्रभू को जो करना चाहिये वह तुम्हारे कहने के प्रथम ही कर चूके हैं। उनकी कृपा का अनुभव करो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन दर्शन

जनम-जनम से जग में भटके हम, जीवन को दु:ख रहित बना न सके
जिस सुख के कारण दु:ख दिया, उस सुख को भी हम पा न सके
गुरु जन सब विधि समझाते हैं, फिर भी हम समझ न पाते हैं।
गुरु विवेक बिनु भव बन्धन से, हम जीवन को मुक्त बना न सके ।।

पाप करत दिन रैन बिताये, सन्त शरण में कबहुं न आये।
जिस कुसंग के कारण ही हम, सत्संग से लाभ उठा न सके ।।

जननी जनक बन्धु सुत दारा में, तन धन धाम मित्र परिवारा में।
सुखासक्ति के बस में होकर, हम ममता मोह छुड़ा न सके ।।

मिट जाती जिससे भ्रान्ति सभी मिल जाती जिससे शान्ति सभी।
अज्ञान तिमिर के कारण ही, नीज विवेक को हम पा न सके ।।

सकल्पों का जाल बिछाकर, जीवन को उसमें उलझा कर।
हम हम करि धन धाम संवारे, फिर भी शान्ति हम ला न सके ।।

काम क्रोध मद लोभ त्याग करि, सद्गुरु ज्ञान हृदय में धरि करि।
साधक सुमिरो नाम सुधारस, जनम मरण में जो ला न सके ।।

सन्त वचन :–

संसार में संसार कीं सेवा के लिये रहो पर अपने लिये परमेश्वर के अतिरिक्त कुछ भी न चाहों। सेवा के लिये सभी को अपना समझो। अपने लिये किसी को अपना न मानो।

मावा के चक्कर से बचना हो तो माया पति परमेश्वर की शरण लो। संसार की सम्पत्ति को अपनी न मानो, भगवाद की जानो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

यह सुन्दर अवसर पाकर के भी जीवन सफल बना न सके तुम ।
वह साधन क्या जिस साधन से भक्ति मुक्ति को पा न सके तुम ।।
धन पाकर के तुम दानी न बने, पद पाकर के निरभिमानी न बने ।
तब तो यह निश्चय है जीवन में, सद्गति पथ पा न सके तुम ।।
झूठे सुख में सुख को माना, परमतत्व को नहिं पहिचाना ।
देह गेह में फंस कर के, सत् पथ पर जा न सके तुम ।।
काम क्रोध मद लोभ हटाओ, निज को सरल विनम्र बनाओ ।
उन दोषों का त्याग करो, जिनसे सुख शान्ति पा न सके तुम ।।
अब कुछ भी अपना मत मानो, सब कुछ परमेश्वर का ही जानो ।
गुरु विवेक बिनु भव बन्धन से, जीवन दुःख रहित बना न सके तुम ।।
जग में जो कुछ भी पाओगे, सब छोड़ यहीं पर जाओगे ।
अन्त समय पछिताओगे, यदि जीवन में पुण्य बढ़ा न सके तुम ।।
बड़े भाग्य मानुष तन पाया, इसको विषयों में है उलझाया ।
फिर तुमसे यमराज डरें क्यों, यदि गुरु विवेक को ला न सके तुम ।।
भक्ति मुक्ति का द्वार यही है, साधन का आधार यही है ।
साधक जीवन व्यर्थ जायेगा, यदि अनुराग बढ़ा न सके तुम ।।

———

सन्त वचन--

या तो अपने में मन लगाओं या फिर भगवान में मन लगाओं । आत्मा में मन को रखना ही उपासना है । या तो अनुरागी बनो या निर्विकल्पता प्राप्त करो, जो सब शक्तियों का मूल है । वृत्तियों की परिधि में न घूमो शक्ति के चेतना के केन्द्र में शान्त होकर अन्तर्यामी का अनुभव करो ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दर्शन

जग में मौज उड़ाने वालो एक दिन तुमको जाना होगा।
साथ न जायेगा कुछ भी फिर, अन्त समय पछिताना होगा।।

इस झूठे सुख की छाया में यदि तू आनन्द मनायेगा।
बदली की सी है यह छाया कठिन धूप फिर खाना होगा।।

उन जाने वालों को तुम समझो, कैसी गति उनकी होती हैं।
यदि दुःख देकर सुख का भोगा तो दुर्गति के पथ में जाना होगा

उन देने वालों को भी समझो क्यों सदा वह देते रहते हैं।
देने में ही सच्चा सुख है यह मन को ही समझाना होगा।।

मानव तन अनमोल मिला है, सत्सगति का भी योग मिला है।
यदि बन्धन मुक्त बना न सके तो जन्म मरण में आना होगा।।

उस ज्ञानी को भी समझो जो जग में निर्भय रहते हैं।
यदि शान्ति चाहते हो जीवन में तब त्याग तुम्हें अपनाना होगा

उस अभिमानी को भी समझो जो मैं मेरी में भूल रहा है।
प्रभु से विमुख हुआ जो मानव यमराज पुरी में जाना होगा।।

उस प्रेमी को भी समझो जो प्रभु को अपना समझे हैं।
यदि प्रेमी बनना है साधक तब प्रभु को ही अपनाना होगा।।

—:०:—

सन्त वचन :—

जो कुछ मिला है उसे अपना न मानो। अपना मानने से ही मोह, लोभ, अभिमान परिपुष्ट होते हैं। सब कुछ परमेश्वर की दया से मिला हुआ समझने पर मोह लोभादि विकार मिटते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाग्रति सन्देश

मोह निशा में सोने वालो जीवन व्यर्थ बिताते क्यों तुम ।
मानव तन पाकर के भी जीवन व्यर्थ गंवाते क्यों तुम ॥
जिसकी सत्ता में यह माया सत्य भासती रहती है ।
शुभ अरु अशुभ कर्म के द्वारा प्रकृति बनाती रहती है ॥
प्रारब्ध भोग के भव बन्धन में सुख दुःख लाती रहती है ।
है असत्य पर भव सागर में नाच नचाती रहती है ॥
कितने प्रेमी मिले जगत में सब छोड़-छोड़ कर चले गये ।
निज कर्मों से स्वर्ग नर्क की गति मति पा कर चले गये ॥
जिनको अपना कहते थे सब छोड़ यहां पर चले गये ।
देखो झूठे सुख के पीछे कितने ही झूठी माया से छले गये ॥
जिसकी सत्ता में मानव सुख दुःख पाते रहते हैं ।
वस्तु व्यक्ति के मोह में फंस कर दुःख उठाते रहते हैं ॥
काम क्रोध ईर्षा की अग्नि से हृदय जलाते रहते हैं ।
लोभी, मोही अभिमानी हो कर माया में जीते मरते हैं ॥
जिस सुन्दरता में मूरख-परमेश्वर को तू भूल रहा है ।
धन वैभव को पाकर के जो तू इतना फूल रहा है ॥
थोड़े दिन के अधिकार को पाकर अहंकार में भूल रहा है ।
एक दिन सब छूट जायेगा जिसको पाकर कूद रहा है ॥
जन्म मरण के भव बन्धन से नहिं होगा तेरा निस्तार ।
जब तक तू स्वार्थ वस होकर करता सबसे ममता प्यार ॥
निज विवेक के आदर बिन नहिं होगा तेरा निस्तार ।
साधक तुम अपने को जानो तब हो जावे बेड़ा पार ॥

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

रे मन मूरख सोच जरा, तू प्रभु की शरण न आयेगा।
अन्त समय कोउ साथ न जाये, यमपुर बांधा जायेगा ।।
सुख वैभव अधिकार पायकर, गर अभिमान बढ़ायेगा।
जो कुछ पाया तूने जग में, साथ नहीं कुछ न जायेगा ।।
लोभी बनकर धन संचय से, लाख करोड़ कमायेगा।
अन्त समय सब यहीं रहेगा, संग न धेला जायेगा ।।
कामी बन कर झूठे सुख में, जो आनन्द मनायेगा।
शक्ति क्षीण हो जाने पर तू अन्त समय पछितायेगा ।।
मोही बनकर सुत दारा से ममता मोह बढ़ायेगा।
सुख के बदले जाने कितना, अन्त में दुःख उठायेगा ।।
सन्त संग में बैठ ले साधक, दिव्य ज्ञान तू पायेगा।
सुर दुर्लभ सुख मिले जगत में, अन्त अमरपुर जायेगा ।।

संत वचन--

भगवान का भजन करो, सब जीवों में एक आत्मा को पहिचानो, सबके साथ दया और प्रेम रक्खो, किसी के साथ झूठा मोह और किसी से द्वेष मत करो। भजन से अरिष्ट ग्रह भी शान्त हो जाते हैं। पर दूसरे से न करवा कर स्वयं करें। भजन और तप से पाप कटते हैं।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन दर्शन

इसको सब कोई क्या समझे जो सन्देश सुनाते हैं।
निज विवेक का करें अनादर जीवन बुरा बनाते हैं ।।
एक बुराई के बदले देखो कितना दुःख उठाते हैं।
सुख के प्रलोभनों में फँसकर दुर्गति के पथ जाते हैं ।।

मिले हुये से ममता करके जो अपना इसे बनाते हैं।
मोही बनकर वस्तु व्यक्ति के बन्धन में पड़ जाते हैं।
यह मोह दुखों की जड़ है, जिसको त्याग न पाते हैं।
मैं मेरी करि मरे जगत में साथ न कुछ ले जाते हैं ।।

सुख में जो सेवा करते हैं, वह अपने पुण्य बढ़ाते है।
दुःख में जो त्यागी बने, चिरशान्ति जगत में पाते हैं ।।
सुख के पीछे जो दौड़ रहे सुख को पकड़ न पाते हैं।
शक्ति क्षीण हो जाने पर, फिर अन्त समय पछिताते हैं ।।

वही सुखी हैं जग में प्राणी जो दुखियों को अपनाते हैं।
करैं बुराई अरु सुख चाहें वह जमपुर बांधे जाते हैं ।।
सन्त संग में जो सदा रहें, वह ज्ञानवान बन जाते हैं।
निज विवेक का आदर करके भव बन्धन कट जाते हैं ।।

बड़भागी वह बनें जगत में, जो वैराग्य बढ़ाते हैं।
जीवन सफल उन्हीं का है, जो प्रेम त्याग अपनाते हैं !!
प्रभु के भक्त उन्हीं को कहिये जो अनुराग बढ़ाते हैं।
सुर दुर्लभ सुख मिले जगत में, अन्त अमरपुर जाते हैं ।।

———

विवेक युक्त जीवन ही मानव जीवन है ! जीवन की पूर्णता सेवा, त्याग और प्रेम से होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नारी के दो रूप

एक वह नारी जो जग से मोह करै,
एक वह नारी जो निर्मोही बन जाती है।
एक वह नारी जो देह में आसक्त रहे,
एक वह नारी जो विदेह कहलाती है।।

एक वह नारी जो जीवन से प्यार करे,
एक वह नारी जो देह को सजाती है।
एक वह नारी वंश की लाज रखै,
एक वह नारी जो वंश को लजाती है।।
एक वह नारी जो जीवन में विनम्र बनी,
एक वह नारी जो अभिमान को बढ़ाती है।

एक वह नारी जो परिवार की सेवा करे,
एक वह नारी जो कलह को मचाती है।।

एक वह नारी जो सबकी सहन करे,
एक वह नारी जो एक की अनेक सुनाती है।
एक वह नारी जो कथा सत्संग करै,
एक वह नारी जो सिनेमा में जाती है।।
एक वह नारी जो साधु की सेवा करै,
एक वह नारी जो ठोकर बताती है।
एक वह नारी जो दुखियों से प्यार करै,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक वह नारी जो दुखियों को सताती है ।
एक वह नारी जो सदा दान करे,
एक वह नारी जो छीन झपट लाती है।
एक वह नारी जो अल्प अहार करै,
एक वह नारी जो ठूस ठूस खाती है॥

एक वह नारी जो सात्विक आहार करै,
एक वह नारी जो चाय बिस्कुट उड़ाती है।
एक वह नारी जो नित्य पंच यज्ञ करे,
एक वह नारी जो बीड़ी सिगरेट उड़ाती है।

एक वह नारी जो सास का आदर करे
एक वह नारी जो सास को सताती है।
एक वह नारी जो भक्त मुक्त बने,
एक वह नारी जो बन्धन का बढ़ाती है॥

एक वह नारी जो बालकों को मुक्त करे,
एक वह नारी जो मोह में फंस जाती है;
एक वह नारी जो चाहों की पूर्ति करे,
एक वह नारी जो त्याग को अपनाती है॥

एक वह नारी जो सपूत पैदा करे,
एक वह नारी जो कुपूत उपजाती है।
एक वह नारी जो सुमति को पदा करे,
एक वह नारी जो परिवार को लड़ाती है॥

एक वह नारी जो गीता रामायण पढ़ै,
एक वह नारी जो उपन्यास मंगाती है।
एक वह नारी जो आज्ञा का पालन करें,
एक वह नारी जो बैठे हुकुम सुनाती है॥

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक वह नारी जो खूब सेवा करे,
एक वह नारी जो जरा में थक जाती है
एक वह नारी जो अभिमान में अकड़े,
एक वह नारी जो सिर को झुकाती है ॥
एक वह नारी जो सदा निरोग रहे,
एक वह नारी जो नित्य दवा खाती है।
एक वह नारी जिसकी वाणी मधुर हो,
एक वह नारी जो गालियाँ सुनाती है।
एक वह नारी जो पति की सेवा करे,
एक वह नारी जो पति को ही नचाती है ॥
एक वह नारी जो भगवान का नाम ले,
एक वह नारी जो दिन भर बड़बड़ाती है।
एक वह नारी जो दूसरों को क्षमा करे,
एक वह नारी जो क्रोध ज्वाला बन जाती है ॥
एक वह नारी जो घर में भोजन करे,
एक वह नारी जो होटलों में खाती है।
एक वह नारी जो सन्तों का आदर करे,
एक वह नारी जो पागल बनाती है ॥
एक वह नारी जो साधक बने
एक वह नारी जो दुर्गति में जाती है।
संसार में वही नारी धन्य है,
जो प्रभु प्रेम में ही लय हो जाती है ॥

** **

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पतित की पुकार

हे नाथ हमारे जीवन का उद्धार न जाने कब होगा।
जिससे सब दुःख मिटा करते वह ज्ञान न जाने कब होगा ।।

अच्छे दिन बीते जाते हैं सुख दुःख में गोते खाते हैं।
भवसागर अगम भरा है पर पार न जाने कब होगा ।।

रवि कर नीर बसै अति दारुण मकर रूप यहि माहीं।
मन अज्ञानी मृग बनि भटकै निज ज्ञान न जाने कब होगा ।।

पचि पचि मरे सुख के खातिर फिर भी सुख नहिं पाया।
राग द्वेष के भव बन्धन से उद्धार न जाने कब होगा ।।

काम क्रोध मद लोभ बढ़ाये निज दोषों को जान न पाये।
दुर्गति से अब सद्गति में प्रस्थान न जाने कब होगा ।।

गुरुजन सब विधि समझाते हैं साधक समझ न पाते हैं।
भोग त्याग कर योग मार्ग का ज्ञान न जाने कब होगा ।।

**

सन्त वचन—

अपना कुछ न मानो, सब कुछ भगवान का जानो मिले हुये का सदुपयोग करो। अपने दोषों के अतिरिक्त किसी अन्य को सुख दाता न समझो।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाग्रति सन्देश

नारायण भज नारायण भज, भज नारायण वनमाली ।
मानव तन अनमोल मिला है, स्वांसा जाय न अब खाली ।।

जब अन्त समय आ जायेगा, तब तुमसे क्या बन पायेगा ।
जिसको अपना कहते हो तुम, वह पड़ा यहीं रह जायेगा ।
कुछ दान करो कुछ धर्म करो, नहिं दोनों हाथ रहें खाली ।।
सुख में सेवा को अपनाओ, दुःख में तुम विरक्त बन जाओ ।
कभी न तुम कर्तव्य भुलाओ, सत्पथ में आगे बढ़ जाओ ।
दोषों के त्यागी बन लो नहि दोनों हाथ रहें खाली ।।
काल सभी को खा जाता है, कोई न इससे बच पाता है ।
थोड़े दिन का सब नाता है, साथ नहीं कुछ भी जाता है ।।
सहसवाहु हिरनाकुश जैसे, रहा न रावण बलशाली ।
इच्छाओं के त्यागी बन जाओ, निज को सरल विनम्र बनाओ ।
प्रभु के अनुरागी बन जाओ, साधक प्रभु के ही गुण गाओ ।
जीवन बन्धन मुक्त बनाओ, नहि दोनों हाथ रहें खाली ।।
नारायण भज नारायण भज.................................,

सन्त वचन :—

वह होश किस काम का जो मानव को स्वार्थी, अभिमानी, क्रूर, कठोर बना दे । जाग्रत वही है जो मन में विकारों दोषों का प्रवेश न होने दे ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गुरुदेव प्रार्थना

गुरुदेव ! तुम्हारे दर्शन का सौभाग्य न जाने कब होगा।
भवसागर अगम भरा है, उद्धार न जाने कब होगा।
सत्संग की गगा बहती है, सब दुःख दोषों का हरती है।
नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा पर पान न जाने कब होगा।
जग के झूठे सुख के पीछे दौड़ रहे मृग बन करके।
जग झूठा, जग का सुख झूठा, यह ज्ञान न जाने कब होगा।
जिनको हम अपना कहते हैं, वह हमें छोड़ते जाते हैं।
इस नश्वर सुख वैभव से वैराग्य न जाने कब होगा।
क्षण क्षण में आयु बीत रही, इन्द्रियां हमें हैं जीत रही।
भोग मार्ग से योग मार्ग में प्रस्थान न जाने कब होगा।
गुरुजन सब बिधि समझाते हैं, साधक समझ न पाते हैं।
श्री राम नाम का जीवन में भंडार न जाने कब होगा।

**

सन्त वचन :—

गुरु तत्व के महत्व को जान लेने पर गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा होती है। गुरु तत्व का दर्शन आंखों से नहीं, गुरु कृपा से बुद्धि-दृष्टि खुलने पर ज्ञान प्रकाश में होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गुरु वन्दना

हे मेरे गुरुदेव तुमको बारम्बार प्रणाम है ।
एक तुम्हीं आधार भगवन, नहीं किसी से काम है ।।
हे जीवन धन, जन, मन पावन, दुखियों के हो दुःख नशावन ।
जब तक तुम न मिलो जीवन में, नहिं मिलता विश्राम है ।
गुरु विवेक बिनु अंधकार है जीवन नैया भव मझार है ।
भव सागर से पार करन को बस एक तुम्हारा नाम है ।।
गुरु बिनु भव से तरा न कोई जो विरचि शंकर सम होई ।
गोविन्द जिनको नरक में डालें, तुमको उन्हें बचाना काम है ।
कृपा तुम्हारी का हे भगवन, कैसे कर सकता हूं वर्णन ।
साधक अब तो शरण तुम्हारी करो मुझे निष्काम है ।।

**

गुरुदेव की आरती

आरती श्री गुरुदेव की कीजै, तन, मन प्राण निछावर कीजै ।
कंचन थार कपूर की बाती, गुरु आये निर्मल भई छाती ।
ऐसे पावन प्रेम पुजारी श्री गुरु चरणारविन्द की कीजै ।
जिन चरणों ने दिया सहारा, भवसागर का मिला किनारा ।
सब मिलकर प्रेम से बोलो, श्री गुरुदेव चरण की जै ।
अज्ञान तिमिर को हटा जिन्होंने, सद्विवेक को दिया जिन्होंने ।
जीवन पावन किया जिन्होंने, ऐसे श्री चरणों की जै जै ।
प्रेम से गूंथी सुमन की माला, मस्तक चन्दन लगे विशाला ।
हृदय प्रेम से भरा हुआ है, साधक ज्ञान प्रेम रस पीजै ।

————

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गुरु की महिमा

गुरुदेव तुम्हारे चरणों का जब हम ध्यान लगाते हैं।
जो दशा हमारी है भगवन वह कहने में शरमाते हैं॥
क्या कहें कहाँ तक कहना होगा कुछ समझ नहीं पाते हैं।
कृपा तुम्हारी का भगवन जब पार नहीं हम पाते हैं॥
सद्विवेक द्वारा भगवन बार बार मन को समझाते हैं।
फिर भी हे जीवन धन भव सागर में गोते खाते हैं॥
कुछ और कृपा करना होगी हम यह विनय सुनाते हैं।
निज दोषों को कैसे दूर करें जब शक्ति नहीं कुछ पाते हैं॥
अब एक सहारा श्री चरणों का चरणों में शीश झुकाते हैं।
'साधक' अब तो निर्भय होकर शरण आपकी आते हैं॥

गुरु तत्व क्या है?

गुरु बिनु होई कि ज्ञान, ज्ञान कि होई विराग बिनु।
गांवहिं वेद पुरान सुख कि लहिय हरि भगति बिनु॥
गुरु बिनु भव निधि तरइ न कोई, जो ब्रिरंचि शंकर सम होई।

सन्त वचन :--

गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता, यह तो सभी जानते हैं, परन्तु यहाँ इतनी बात समझनी है, कि गुरु ज्ञान. बिना वैराग्य टिकेगा नहीं। वर्तमान में यही भूल कि गुरु तो कर लेते हैं परन्तु वैराग्य नहीं करते। इससे वह गुरु ज्ञान जीवन में नहीं टिक पाता है। जब तक तीव्र वैराग्य नहीं होता। तब तक मानव गुरु पद को नहीं प्राप्त कर सकता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाग्रति संदेश

जागो सज्जन बृन्द हमारे, मोह निशा के सोवन हारे,
जागो जागो हुआ सवेरा, मोह निशा का उठ गया डेरा।
ना घर मेरा न घर तेरा, सतगुरु ज्ञान समझ ले प्यारे,
जग में जो कुछ तुमने पाया, जिसको तुमने है अपनाया।।
यह सब कोई काम न आवे, एक दिन सब हों जावे न्यारे,
यह महा घोर अज्ञान तिमिर, जिसमें तुम भटके इधर उधर।
गुरु विवेक का करो सहारा, मिट जावें भवबन्धन सारे।
जो विषयों से न विरक्त हुये, सच्चे प्रभु के जो न भक्त हुये।।
वह गुरु जब यह समझाते हैं अब भज लो कृष्ण मुरारे,
बड़े भाग्य से नर तन पाया, झूठे सुख में क्यों उलझाया।
जीवन सारा व्यर्थ बिताया तज दे विषयों के सुख सारे,
बहुत नहीं तो कुछ कुछ कर ले, पुण्य कर्म से जीवन भर ले।।
जो समय गया फिर नहीं मिलेगा क्यों जीवन व्यर्थ गुजारे,
जिससे भ्रान्ति नहीं मिटती, जिससे शान्ति नहीं मिलती।
साधक उसका त्याग करो, मिट जायेंगे सुख दुःख सारे।।
जागो सज्जन बृन्द हमारे मोह ....

—:o:—

सन्त वचन :--

संसार से कुछ नहीं चाहने वाला भगवान को पाता है जो किसी का नहीं तथा जिसका कोई नहीं उसके भगवान अपने आप सब कुछ हो जाते हैं।

मानव वही है जो कुछ जानता भी है और मानवता भी है। सभी दुर्बलताओं की निवृत्ति मानव जीवन की माँग है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन का सार

इस जीवन का सार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन।
इस दुनियाँ में पुरुषार्थ यही है, बन जायें इन्सान किसी दिन।
जप, तप, व्रत अरु संयम से, संत संग ध्यान अरु सेवा से।
सब साधन का सार यही है, मिट जाये अज्ञान किसी दिन।
सुख, सम्पति जो मिली जगत से, एक दिन सब छूट जायेगी।
सब मिलने का सार यही है, हो जावे यह दान किसी दिन।
इस शरीर से सेवा करले, राम नाम को हिय में धर ले।
उड़ जाये जब स्वास का पछी, बन जाये शमशान किसी दिन।
जिनको तुम अपना समझे हो, वह काम न तेरे आयेंगे।
साधक सत्संग बैठि करि, मिल जाये गुरु ज्ञान किसी दिन।

अपने की पहिचान

पगले अपने को पहिचान।
तू देह नहीं तू गेह नहीं जन्म नहीं अरु मरण नहीं।
सत्चित आनन्द रूप है तेरा, क्यों बनता है अनजान ।।
काबा ढूढ़े, काशी ढूढ़े मन्दिर अरु मसजिद में ढूढ़े।
अन्तर में कबहु नहिं खोजे, ढूढ़े सकल जहान ।।
ना तू ज्ञानी न अज्ञानी, ना तू सेवक न तू स्वामी।
सबसे न्यारा रहे सदा तू सदगुरु का यह ज्ञान ।।
न तू आता न तू जाता, न तू खाता न तू सोता।
दृष्टा बनकर देख जगत को यह है आत्म ज्ञान ।।
दृश्य जगत में रहा लुभाना, अपने को तू नहिं पहिचाना।
निज स्वरूप को जान ले 'साधक' तब होगा कल्यान ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भूल की याद

साधक तुम यह भूल न जाना देखो जीवन दो दिन का।
यह व्यर्थ न जाने पावे देखो जीवन दो दिन का ।।
कंचन कामिनी काया में, तुम भूल न जाना माया में।
इस जग में सुख नहीं है देखो जोवन दो दिन का ।।
सपने की सी यह माया क्यों जीवन इसमें उलझाया।
कुछ साथ नहीं जाना है देखो जीवन दो दिन का ।।
आये रावण से अभिमानी, भये कर्ण सरीखे से दानी।
तुम भी कुछ पुण्य कमा लो, देखो जीवन दो दिन का ।।
भव सागर यह अगम भरा है, इसमें कुछ भी नहीं धरा है।
सुख दुःख में डूब रहे हैं, देखो जीवन दो दिन का ।।
ज्ञानी को इसमें तरते देखा, अज्ञानी को मरते देखा।
सद्गुरु ज्ञान पकड़ लो साधक, देखो जीवन दो दिन का ।।

सावधान हो !

तेरी गठरी में लागे चोर, बटोहिया काहे सोवे।
भजाले अब नन्दकिशोर, उमरिया काहे खोवे।
काम ने लूटा, क्रोध नें लूटा, लूट चले मद लोभ।
अब होइ गयो भोर, नहिं लीन्ह खबरिया काहे रोवे।
चार गजा चरगज मंगा कर, चढ़े काठ की घोड़ी।
जिस तन से सब प्यार करते थे, फूंक दीन्ह जस होरी।
हाड़ जरे लड़की जैसे, केस जरें ज्यों घासा।
राम कृपा से वो बचि गये, जो नित सन्तन के पासा।
राम नाम का करो सहारा, छोड़ि जगत की आसा।
'साधक' सब सुख मिले जगत में, अन्त अमरपुर वासा।

×—×

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कीर्तन

जय रघुनन्दन, जय घनश्याम, हे दुःखभजन तुम्हें प्रनाम।
हम आये हैं शरण तिहारी अब सुन लो विनय हमारी।
दुखियों के तुम दुःखहारी, भक्त जनों के जीवन प्रान।
दशरथ राज दुलारे राम, यसुधा के तुम प्यारे श्याम ॥१॥

मातु, पिता, भगनी, सुत, नारी, स्वारथ बस सब बने पुजारी।
तुम समान नहिं कोउ हितकारी, भव-भय भजंन सीताराम।
गोपी बल्लभ राधेश्याम, जानकी बल्लभ सीताराम ॥२॥

शरणागत के पालक तुम हो, अज्ञान तिमिर के नाशक तुम हो।
अधमों के उद्धारक तुम हो, भक्तों के मन रंजन श्याम।
इतनी करुणा कर दो राम, दुःख हर लो सुख भर दो राम ॥३॥

जब जीव शरण में आ जाता, तब निर्भय पद को पा जाता।
भव बन्धन से तब छूट जाता, जय नन्द नन्दन जय घनश्याम।
'साधक' के तुम जीवन राम, हे दुःख भजन तुम्हें प्रनाम ॥४॥

**

सन्त वचन :—

भक्ति, प्रेम एवं ध्यान से भगवान मिलते हैं। जिससे जीव प्रसन्न रहते हैं उससे परमात्मा भी प्रसन्न रहते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कीर्तन

यदि सदा सत्संग में ही आते रहोगे।
तो मन को विरागी बनाते रहोगे ॥

यह निश्चय है सब दुःख मिटेंगे तुम्हारे।
यदि दोषों को मन से हटाते रहोगे ॥

यदि करो सदा ही दुःखियों की सेवा।
तो पुण्यों को अपने बढ़ाते रहोगे ॥

बिगड़ी बनेगी तभी तुम्हारी जगत में।
जो बिगड़ी किसी की बनाते रहोगे ॥

बनेगा तभी शान्त जीवन तुम्हारा।
यदि चाहों को मन से हटाते रहोगे ॥

मुक्ति मिलेगी तभी बन्धनों से।
जो आसक्ति ममता मिटाते रहोगे ॥

प्रेमी बनेगा तब तुम्हारा यह जीवन।
जब प्रभु को ही अपना बनाते रहोगे ॥

बनेगा हृदय जब अनुरागी तुम्हारा।
तो 'साधक' प्रभु प्रेम पाते रहोगे ॥

----:o:----

सन्त वचन :-

सत्संग और विचार के योग से आत्मा के अनन्त गुण विकसित होते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रभु की रचना

प्रभु कैसा खेल रचाया।
शून्य भीति पर बना जगत ये, प्रभु की कैसी माया ॥
पत्ती पत्ती की कतरन न्यारी, कैसी लगाती प्यारी प्यारी।
तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं, अद्भुत खेल दिखाया ॥
जग को पैदा होते देखा, फलते फूलते मिटते देखा।
उसका पता नहीं है लगता, जिसने इसे बनाया ॥
पाँच तत्व का मेल मिलाकर, मन, बुद्धि अरु चित बनाकर।
नाम रूप का रंग चढ़ा कर, कैसा चित्र बनाया ॥
असत को सत्य है हमने माना, परम तत्व को नहिं पहिचाना।
जग के भ्रम में पड़कर सेवक, सत्य को जान न पाया ॥

चेतावनी

तुम बुद्धिमान मानव सोचो, तुम किधर भागते जाते हो।
मृग तृष्णा के भ्रम में पड़कर, तुम क्यों दुःख उठाते हो ॥
जिसको तुमने सुख है माना, जिसमें फिरते हुए दिवाना।
अमृत प्याला फेंक विषय में, तन मन सभी डुबाते हो ॥
कौन कहाँ से कैसे आया, इसका भेद जान नहिं पाया।
शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध में, क्यों आनन्द मनाते हो ॥
इन्द्रियन से सम्बन्ध तोड़ कर विषयों से मुख को मोड़कर।
सुत, दारा से मोह छोड़ कर, शरण प्रभु की क्यों न जाते हो ॥
मानव तन का मूल्य चुकाओ, साधक प्रभु की शरण में जाओ।

सन्त वचन--

जो किसी से कुछ नहीं चाहते, वह परम शान्ति पा जाते हैं।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन संदेश

सोचो झूठ जग के सुख में कब तक चैन मनाओगे ।
गुरु जन जो कहते हैं तुम कब तक उसे भुलाओगे ।।
जिसको तुमने अपना माना, उसको निश्चय एक दिन जाना ।
पड़ा रहे यह खेल तुम्हारा, फिर पीछे पछताओगे ।।
धन संग्रह में उमर बितानी, तृष्णा तबहूं नहीं अघानी ।
सग में जावे एक न पाई, छोड़ सभी तुम जाओगे ।।
मानव तन का मरम न पाया, इसको विषयों में उलझाया ।
एक दिन काल अचानक आया, फिर कुछ नहिं कर पाओगे ।।
सकल सृष्टि का जो कर्ता है, सब जीवों का जो भर्ता है ।
सेवक ऐसे स्वामी के तुम शरण न कब तक आओगे ।।

शुभ अवसर

कितना सुन्दर अवसर है तुम जीवन सफल बनाओ ।
तजि कुसग सत्संग बैठ निज को निर्दोष बनाओ ।।
जग में कुछ भी पाओगे, सब छोड़ यहीं पर जाओगे ।
तुम दानी बन कर जग में अब पुण्य का लाभ उठाओ ।।
काम, क्रोध मद लोभ हटा निज को सरल विनम्र बनाओ ।
उर अभिमान कभी नहिं आवे, अब त्याग प्रेम अपनाओ ।।
सेवा करो स्वार्थ को त्यागो, विषय सुखों से अब तुम भागो ।
दीनों दुखियों को अपना कर, अब दीनबन्धु बन जाओ ।।
देह गेह से ममता तोड़ो परम प्रभु से नाता जोड़ो ।
प्राप्त गुणों से अब तुम अपनी, अन्तर प्रकृति सजाओ ।।
इच्छाओं के त्यागी बनकर, प्रभु के ही अनुरागी बनकर ।
जग से सम्बन्ध तोड़ के साधक तुम प्रेम गीत अब गाओ ।।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

परमार्थ दोहावली।

साधक उसे सराहिये, चले धर्म की रीति।
धर्म बिना जीवन नहिं, ज्यों बालू की भीति।

साधक परमार्थ में, सन्त वचन है सार।
देना सीखो प्रेम का लेना नाम अधार॥

समता से ममता हटै, ममता से हरि दूर।
साधक समता धारिये, क्यों चाटै जग धूर।

साधक इनको त्याग दो, जो चाहो कल्याण।
एक कंचन अरु कामनी, मद, ईर्षा अरु मान।

साधक इनमें रमि रहो, दया, दान, उपकार।
सत्संग अरु हरि भजन, यह जीवन का सार।

काम, क्रोध, लोभ ये, तीन नरक की खानि॥
इनसे बचि कर रहो, है जीवन की हानि॥

जग जीवन है सफल, लेवे हरि का नाम।
साधक ते मति मन्द हैं, जो चाहत हैं दाम।

साधक उनकी बन गयी, जिन पकड़ो हरि नाम।
दुर्भागी जग में वही, जिन्हें सतावत काम।

**

सन्त वचन—

परमार्थी वही है जो शाश्वत शान्ति प्राप्त कर लेता है। स्वार्थ के त्याग से परमार्थ की प्राप्ति होती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गोपी प्रेम

उधा प्रेम जगत में सार।
प्रेम बिना व्यर्थ है जीवन, प्रेम बिना सब भार।
कर्म, उपासना ज्ञान वेद मत सो सब विधि साँची।
कौन करे, योग साधना मैं तो श्याम रंग में रांची।
निशिदिन वरसत नैन प्रेम जल जब से श्याम सिधारे।
कंचुक पट कबहूं नहिं सूखत कर कपोल भये कारे।
किसे सुनाऊँ पीर आपनी, कोई न सुनने वाला।
रोम-रोम में वसा हुआ है, वह यसुदा का लाला।
वह वंशी वैरिन हो गई, संग छोड़ जो धाई।
लगी रहत सदा अधरन में ऐसी श्याम को भाई।
हम तो बिरही श्याम विरह की श्याम के हाल सुनाओ।
कबहुंक याद करत हैं मेरी यह तो मोहि बताओ।
साधक प्रीति की रीति यही है यही प्रेम अपनाओ।
जग की सब आश छोड़ करि प्रेम गीत तुम गाओ।

शरणागत

भगवान तुम्हारे चरणों में अब हम आनन्द मनायेंगे।
मान मोह, माया को तजकर, गीत तुम्हारे गायेंगे।।
अपने तन को वीन बनाकर, प्रेम स्वरों का तार चढ़ा कर।
आनन्द भरी झनकारों में, श्री राम नाम गुण गायेंगे।।
जिन चरनों को ऋषि मुनि ध्याते, मन को मधुकर सरिस बनाते
उन्हीं चरणों में अब तो भगवान, निशदिन ध्यान लगायेंगे।।
सेवक की अब टेर यही है, कर जोड़ प्रभु से विनय यही है।
चरण कमल को पा करके, अब हम मधुकर बन जायेंगे।।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

ओ जाने वाले सोच जरा क्या संग लेकर तू जायेगा।
राम भजन यदि नहिं कीन्हा तो अन्त समय पछतायेगा ।।
देह गेह में रहा भुलाना अपने को तू नहिं पहिचाना।
निज स्वरूप को जान ले बन्दे नहि तू गोता खायेगा ।।
यह जग है कांटों की बारी जिसमें रहती दुनियां सारी।
सुख दुख में जो डूब रहे हैं सदगुरु ज्ञान बचायेगा ।।
ज्ञानी भव से पार हुए हैं अज्ञानी सब डूब गये हैं।
राम नाम का करो सहारा भव से पार लगायेगा ।।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी अन्त समय में सब कुछ छोड़ी।
कुछ दान करो कुछ धर्म करो साथ न कुछ भी जायेगा ।।
अपना सा दुःख सबका जानो परम तत्व को तुम पहिचानो।
जीवन में तुम मरना सीखो अन्त अमर पद पायेगा ।।
तुम प्रेम करो अविनाशी से मिल जाओ सब उरवासी से।
ऐसे प्रेमी बन जाओ साधक तभी प्रेम रस पायेगा ।।

प्रार्थना

हे दयामय दीनबन्धो अब नाथ करुणा कीजिये।
कर रहा विनती हूं मैं, अब नाथ सुन तो लीजिये ।।
माया झकोरों में पड़ी, अब नाव है यह जा रही।
कामादि के चक्कर में पड़कर जल्द डूबी जा रही ।।
सुत मातु पितु परिवार ये नहिं सहारा दे रहे।
बस नाम लेकर आपका हम नाव अपनी खे रहे ।।
सेवक की सुन के टेर करुणा सिन्धु करुणा कीजिये।
नाव भव से पार हो अब आके सहारा दीजिये ।।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जाग्रति सन्देश

तुम बुद्धिमान मानव जागो, क्यों मोह में दुःख उठाते हो ?
माया ममता में पड़कर क्यों, जीवन व्यर्थ गंवाते हो ?
सोंचो जग में भोगों का यह, खेल रहेगा कितने दिन ?
अब तक पूर्ण नहीं कर पाये फिर पूर्ण करोगे कितने दिन ।।
जों पूर्ण नहीं है पूर्ण न होगा क्यों व्यर्थ में समय गंवाते हो ।
सत पथ पर चलने का तुमने जीवन में नहिं अभ्यास किया ।।
मिलती है परम शान्ति जिसमें ज्ञान का नहीं प्रकाश किया ।
कामादि बिकारों में पड़कर तुम अपना नाश कराते हो ।।
जो समय गया वह चला गया, लौट के फिर नहिं आवेगा ।
जो दिखता है वह नहिं रहेगा एक दिन निश्चय जावेगा ।।
सेवक जो सदा नहीं रह सकता फिर क्यों उसको अपनाते हो ।

प्रेरणा

मनुआ राम नाम सुखदाई ।
तजि हरि नाम न लहयो काहू सुख, जीवन व्यर्थ बिताई ।।
निशि दिन भ्रमत फिरत निषयन में, कतहूं चैन न पाई ।
अबहूं कछु विगड़ो नहिं तेरो, रघुवीर शरण हो जाई ।।
शबरी, गीध, अहिल्या, मीरा, नाम जपे गति पाई ।
राम नाम बिन काम न आवे, सुत, दारा औरु भाई ।
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, चुन चुन महल बनाया ।
अन्त समय कोई काम न आवे, हंस अकेला जाई ।।
सुनी बहुत एकउ नहिं कीन्हीं, तकि तकि आस पराई ।
अब नाथहिं अनुराग रे मनुआं सबहि काम बिसराई ।।
साधक गुरु चरणों में लागो, भज राम नाम सुखदाई ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानव जीवन

मानव जीवन क्या है ? तुम इसकी पहिचान न भूलो।
शैतान को जो इन्सान बनाता सद्गुरु ज्ञान न भूलो ।।
तुम जिससे सब कुछ पाते हो, जिस जग में आनन्द मनाते हो।
एक वह ही है इस जग में तेरा, तुम उसका एहसान न भूलो ।।
एक वही दाता है जग में, एक वही नाता है जग में।
हम सेवक वह स्वामी मेरा, तुम ऐसा अभिमान न भूलो ।।
किसी का बुरा न चाहो भाई, इसमें होती नहीं भलाई।
जो जैसा करता वैसा भरता, यह जीवन का ज्ञान न भूलो ।।
जिसको तुमने अपना माना, निश्चय है उसका छूट जाना।
जो तुमको कभी न छोड़े, तम ऐसा भगवान न भूलो ।।

—:०:—

सन्त वचन–

विवेक युक्त जीवन ही मानव जीवन है। जिसकी मांग सबको हो, जिसमें कोई मांग न हो वही जीवन है।

मानव जीवन के चार विभाजन हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ और सन्यास।

गुणों का विकास करना ब्रह्मचर्य जीवन है। धन और मर्यादा के अन्दर उपभोग करना गृहस्थ जीवन है। तप संयम और सेवा बानप्रस्थ का जीवन है। सब प्रकार के संकल्पों का त्याग, अपने स्वरूप में स्थित रहना सन्यासी का जीवन है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चेतावनी

जग में हरि बिन कोई काम न आयो ।
यह दुनियाँ फूल सेमर को देखत मन ललचायो ।।
लोभी बनकर रहे जगत में लाख करोड़ कमायो ।
झूठ कपट छल कियो रैन दिन मन सन्तोष न पायो ।।
कामी बनकर सुख के पीछे स्वान सरिस ह्वै धायो ।
यह वही काम हैं जिसनें जनम जनम भटकायो ।।
अभिमानी बन अधिकार पाय करि फूलो नाहि समायो ।
सेवा, त्यागि, स्वार्थ के बस में दुःखि मन बहुत सतायो ।।
मोही बनकर फँसे जगत में सुत दारा में उरझायो ।
अन्त समय कोई साथ न दीन्हों हँस अकेला धायो ।।
कहँ लगि कहौं दोष अपने बरनत मन सकुचायो ।
साधक का उद्धार करो अब शरण तुम्हारा आयो ।।

साधक राम से प्रेम बढ़ाओ जीवन सफल बनाओ ।
दोषों के त्यागी बनकर प्रभु के ही अनुरागी बनकर ।।
सद्बिवेक का आदर करके दिब्य ज्ञान अपनाओ ।
जो भोगों में आसक्त बनें प्रभु के जो नहिं भक्त बनें ।।
तन के रोगी मन के भोगी क्यों जीवन व्यर्थ गंवाओ ।
सुत दारा में क्यों उलझाया, धन पाकर क्यों लोभ बढ़ाया ।।
लोभ, मोह का त्याग करो अब, गुरु बिवेक अपनाओ ।
सेवा करो, स्वार्थ को त्यागो, विषय सुखों से अब तुम भागो ।।
साधक प्रभु चरणों में लागो, अब प्रेम गीत तुम गाओ ।।

सन्त वचन—

जीवन को सफल करने के लिये सब प्रकार की भोगेच्छाओं का त्याग करना होगा ।

CC-0. Arya Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन की सफलता

मिली सफलता उन्हीं को जग में जो दोष अपने घटा रहे हैं।
वही अभागी रहेंगे जग में जो मोह ममता बढ़ा रहे हैं ।।

सुख के पीछे जो दौड़ते हैं सुख तो उन्हें नहीं मिलेगा।
होंगे सुखी वही जगत में जो सुख को अपने लुटा रहे हैं ।।

शक्तिशाली उन्हीं को कहते जो निर्बलों के हैं काम आते।
आसुरी प्रकृति के वही हैं मानव जो निर्बलों को सता रहे है ।।

उन्हीं कों दुःख मिलेगा जग में जो दोष अपने बढ़ा रहे हैं।
उन्ही की बिगड़ी बनेगी जग में जो बिगड़ी किसी की बना रहे हैं
भाग्यवान उन्हों को कहते जो दीन दुखियों से प्रेम करते ।।
यश कीर्ति मिलेगी जग में, वह भाग्य अपना बना रहे हैं।
काम, क्रोध, मद अहंकार से जिनका हृदय नहीं जलता है ।।
धन, वैभव न होने पर भी हृदय को शीतल बना रहे हैं।
इस जग को तुम सपना मानो, किसी को तुम न अपना मानो।
मोह नींद को त्याग दो साधक सद्गुरु तुम्हें जगा रहे हैं ।।

———

सन्त वचन :-

मानव जीवन की सुख की माग धन से, अधिकार से वस्तुओं से नहीं पूरी होगी वह तो विवेक युक्त जीवन से पूरी होगी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शुभ संदेश।

मानव तुम इस जग में अब सुख से रहना सीख लो।
लाखों अज्ञानी डुब रहे हैं तुम पार उतरना सीख लो॥
इस जग में नहीं ठिकाना, एक दिन सबको पड़ेगा जाना।
जग से तुमको क्या है पाना, सब छोड़ यहीं पर है जाना॥
ज्ञानी जैसे जग में रहते, तुम वैसा रहना सीख लो॥१॥
कोई सुख में फूल रहा हैं, कोई दुःख में भूल रहा है।
कोई जग में आता जाता कोई जग में रोता गाता॥
सुख दुख के भव सागर में, तुम निर्भय तरना सीख लो।
जग मैं आने वाले को देखो जग मैं जाने वाले को देखो।
जग में लेने वाले को देखो, जग में रोने वाले को देखो॥
यदि मानव बनना है तो, दुःखियों को सुख देना सीख लो।
राजे अरु महराजे आये, हम हम करि धन, धाम बनाये॥
मैं मैं करि अभिमान बढ़ाये जीवन योंही व्यर्थ गँवायो।
साधक जग में जन्म न हो, अब ऐसा मरना सीख लो॥

सन्त वचन–

मानव जीवन की सुख की माँग धन से, अधिकार से, वस्तुओं से नहीं पूरी होगी, वह तो विवेक युक्त जीवन से पूरी होगी। जीवन की पूर्णता सेवा, त्याग, प्रेम से होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh.

सदा स्वस्थ रहने की प्रेरणा पद्य

प्रातः तुम जल्दी उठना । राम नाम का सुमिरन करना ॥
मुँह में पानी फिर तुम भरना । शीतल जल से आँखें धोना ।
शौच के पहले पानी पीना । मिट्टी से तुम मंजन करना ॥

मातु पिता गुरु को करना नित्य प्रणाम ।
मानव जीवन का यही परम धर्म सुखधाम ॥

प्रातः ही स्नान करो तुम । योगासन प्राणायाम करो तुम ॥
शान्त बैठ कर ध्यान करो तुम । गीता रामायण पाठ करो तुम
फल का ही जलपान करो तुम । फिर अपना सब काम करो तुम
भूख लगे तब भोजन करना । पूरा पेट कभी नहीं भरना ।
बाद में फिर पेशाब करो तुम पानी से आँखें साफ करो तुम ।

बायीं करवट आठ ले, सोलह सीधा लेट ।
बत्तिस दाहिने लीजिये, कबहु न बिगड़े पेट ॥

चाय काफी से डरते रहना । बीड़ी सिगरेट कभी न पीना ।
मिर्च मसाला त्याग करो तुम । सात्विक भोजन सदा करो तुम ॥
मोटा आटा चोकरदार । साग बनाओ छिलके दार ॥
चावल से न माड़ पसाओ । मौसम के फल नित प्रति खाओ ॥
खूब चबा कर खाना तुम । कभी दवा नहिं खाना तुम ॥
एकादशी का उपवास करो । केवल जल का पान करो ॥
पेड़ू पर मिट्टी को चढ़ाना । तीस मिनट के बाद हटाना ॥
गरम पानी का एनिमा लेकर । वाद में फिर तुम कुजंर करना

यह है प्राकृतिक जीवन का ज्ञान ।
सुखी रहो यह मेरा बरदान ॥

स्वामी साधनानन्द

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जीवन से निराश-दुःखी रोगियों के

आशा का स्थान

आनन्द प्राकृतिक चिकित्सालय

"आनन्द निकेतन" पो० नकटिया, बरेली (उ० प्र०)

यदि आप किसी ऐसे राग से कष्ट पा रहे हैं, जो दवा कराने से भी नहीं जाता। एकबार दवा छोड़कर प्राकृतिक चिकित्सा की शरण लीजिये। आपको नवजीवन मिलेगा. पुनः स्वस्थ हो जायेंगे। साथ ही सदा स्वस्थ रहने का ज्ञान भी हो जायेगा।

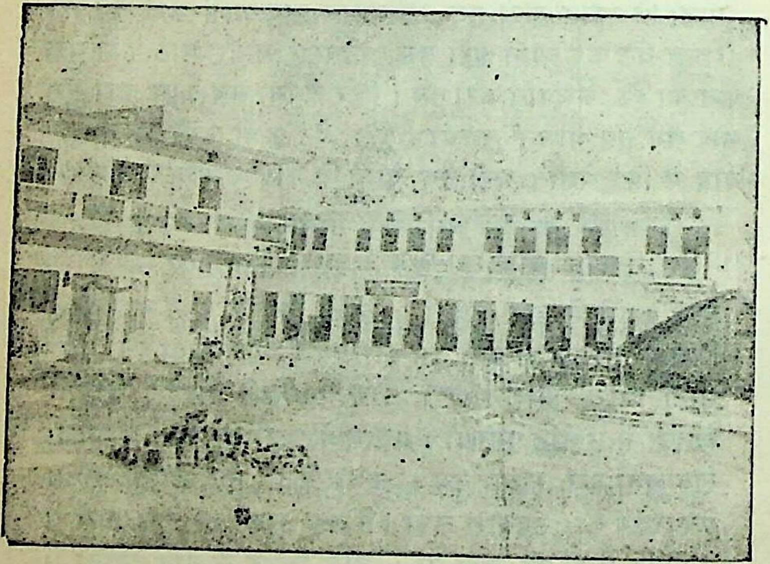

प्राकृतिक सभी साधनों से सुसुज्जित "आनन्द निकेतन"

सुविधायें——निवास, विजली पानी, शुद्ध गौं दुग्ध, भोजन का उत्तम प्रबन्ध। अनुभव शील चिकित्सकों द्वारा चिकित्सा का उत्तम प्रबन्ध।

परिचय पत्र के लिये लिखे। फोन नं० ६३२७

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्राकृतिक चिकित्सा शिविर कीजिये

यदि आप चाहते हैं कि आप और आपका परिवार तथा मानव समाज बिना दवा के केवल मिट्टी, पानी की चिकित्सा से कठिन से कठिन रोगों से मुक्त हो जाय और सदा स्वस्थ रहने का ज्ञान मिल जाय तो अपने क्षेत्र में प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन कीजिये।

आनन्द प्राकृतिक चिकित्सालय बरेली की ओर से भारत के सभी प्रदेशों में अभी तक १०० शिविर लगाये जा चुके हैं। जिनसे हजारों रोगियों को नवजीवन मिला है।

घर बैठे प्राकृतिक चिकित्सा कीजिये

यदि आप चाहते हैं कि बिना दवा के घर बैठे अपने रोग की प्राकृतिक चिकित्सा करें तो आज ही ५ रु० का मनीआर्डर नीचे लिखे पते से भेजकर अपने रोग का पूरा हाल लिखकर भेजें। आपको एक माह का चार्ट बनाकर भेजा जायेगा।

विशेष जानकारी के लिये पत्र व्यवहार करें। उत्तर के लिये २० पैसे का टिकट अवश्य भेजें।

पता—**व्यवस्थापक—आनन्द प्राकृतिक चिकित्सालय,**
पो० नकटिया जि० बरेली [उत्तर प्रदेश]

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हमारे यहाँ की निर्मित--

दैनिक घरेलू उपयोगी वस्तुयें

[१]	शुद्ध शहद	११-०० किलो
[२]	आनन्द प्राकृतिक चाय	१२-०० ,,
[३]	आनन्द दन्त मन्जन	२-०० ,,
[४]	आनन्द ब्राह्मी आंवला तेल	१४-०० ,,
[५]	सोयाबीन का बीज, आटा, दाल	२-०० ,,

प्राकृतिक चिकित्सा यन्त्र

(१) मिट्टी पट्टी बनाने के साचें
(२) एनिमायन्त्र
(३) सेंक देने की रबड़ की थैली
(४) सेंक देने की बिजली की थैली।
(५) बर्फ की थैली
(६) जलनेती यन्त्र
(७) कटिस्नान टब
(८) स्पाइनल बाथ टब
(९) फुटबाथ टब
(१०) स्टीम यन्त्र केटली
(११) आँख धोने का यन्त्र
(१२) ऊनी सूती पट्टी
(१३) मेहन स्नान की चौकी
(१४) फुल बाथ टब
(१५) आनन्द आटा चक्की

नोटः--नोट उपर्युक्त यन्त्रों के मूल्य की जानकारी पत्र द्वारा प्राप्त करें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यदि आप शरीर को स्वस्थ, मन को शान्त, बुद्धि को विवेक शील बनाकर सुख शान्ति दीर्घ आयु प्राप्त करना चाहते हैं।

तो !

निम्न पुस्तकें एक बार अवश्य पढ़िये।

लेखक—श्री १०८ स्वामी साधनानन्द जी महाराज

सुलभ प्राकृतिक उपचार	३·५०	भोजन बनाने की कला	१.००
प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान	३.५०	कच्चा खाओ मौज उड़ाओ	.४०
भोजन द्वारा स्वास्थ्य	६.००	संतवचनामृत	१.५०
हम क्या खायें ?	२.००	ईश्वर प्रार्थना	२.००
उपवास दर्शन	२.००	मानस दर्शन प्रथम भाग	१.५०
दुग्ध चिकित्सा	१.५०	,, ,, द्वितीय भाग	१.५०
ज्वर का सुलभ उपचार	०·५०	राम नाम महिमा	१.००
दांतों का उपचार	.७०	नारी महिमा	२·००
सोयावीन के प्रयोग	.७०	आध्यात्म प्रश्नोत्तरी	.५०
आरोग्य का अमूल्य रत्न गोमूत्र	·२५	सुख दुःख	·५०
मिट्टी की महिमा	·२०	साधक भजन संग्रह	·२५
घर का स्वर्ग	·२५	बाल प्रश्नोत्तरी	·२५

प्राप्ति स्थान :—

शुद्ध वस्तु भंडार, आनन्द निकेतन, नकटिया बरेली।

मुद्रक—विशाल प्रिन्टिंग वर्क्स, नैनीताल रोड बरेली।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आपके घर का आनन्द

आनन्द निकेतन

मासिक पत्र

पढ़िये और पढ़ाइये

मानव मात्र के प्रत्येक गृह के लिये

अत्यन्त उपयोगी

उच्चकोटि के विद्वानों द्वारा लिखित

आध्यात्म, ग्रामोद्योग, सदाचार

प्राकृतिक जीवन सम्बन्धी

लेखों का समन्वय

प्राकृतिक चिकित्सा सीखने

का

एक मात्र साधन

अतः आज ही वार्षिक मूल्य ५) रु० भेजकर

"आनन्द निकेतन" का आनन्द लीजिये

व्यवस्थापक:- **आनन्द निकेतन**

पो० नकटिया, बरेली (उ०प्र०)

नमूने की प्रति निःशुल्क मंगाइये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

केवल मुख पृष्ठ मुद्रित : अवस्थी प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर - १

ईश्वर प्रार्थना • मूल्य २) रुपया